॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मई 2018 वर्ष 21, अंक 5 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2075 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये | कुल पृष्ठ 20

दुष्कर्म की बढ़ती घटनाएं व उनसे निपटने के उपाय

❒ आचार्य सत्यवान् आर्य

पिछले कुछ वर्षो में दुष्कर्म की घटनाओं में व्यापक वृद्धि हुई है। ऐसा नहीं है कि ये घटनाएं केवल बड़े शहरों में ही हुई हों बल्कि देश के सभी छोटे-बड़े शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों में समान रूप से इस समस्या ने पैर पसारे हैं। हालांकि जन-समुदाय की व्यापक प्रतिक्रिया से सरकार जागी व उसने इसके विरूद्ध एक कठोर नियम बनाया जिसे क्रिमिनल लॉ (संशोधन) एक्ट 2013 का नाम दिया गया। लेकिन कठोर नियम बनने पर भी घटनाओं में पहले की अपेक्षा बढ़ातरी हुई है। इस लेख के माध्यम से हम इस समस्या के कारणों पर विचार करेंगे जिससे इस समस्या का निवारण सम्भव हो सके, क्योंकि दर्शनकार के अनुसार 'कारणाभावात् कार्याभाव:'।

1. **विद्यार्थियों में चरित्र-निर्माण की शिक्षा हो**- ऐसी प्रवृत्तियों पर रोक के लिए चरित्र-निर्माण की शिक्षा दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि स्मृतिकार के अनुसार 'जन्मना जायते शूद्र:' अर्थात् मनुष्य जन्म से शूद्र अर्थात् मूर्ख, अज्ञानी होता है। वह गुरु के पास रहकर विद्या व सत्य-भाषणादि गुणों से सम्पन्न बनता है, इसलिए वेद भी कहता है-'मनुर्भव' लेकिन आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में विद्या के नाम पर केवल भौतिक पदार्थों का ज्ञान कराया जाता है। क्या कभी किसी स्कूल व या कॉलेज में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, आत्मा, व्यवहारादि की शिक्षा दी जाती है। जब कभी न माता-पिता और न गुरु लोग ऐसी शिक्षा देते हैं तो सन्तानों से ऐसी अपेक्षा व्यर्थ है कि वे समाज में गलत व्यवहार नहीं करेंगे। वस्तुत: देश की सभी समस्याएं यहीं से पैदा होती हैं। आधुनिक व प्राचीन शिक्षा-प्रणाली का मूल भेद यही है कि प्राचीन काल में मानव-निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है। फलस्वरूप आज का युवा भौतिक विज्ञान व तकनीक के बारे में तो गहन जानकारी रखता है, लेकिन उसमें यह जानकारी व भाव नहीं है कि मैं समाज में किस प्रकार का व्यवहार करूं जिससे मैं स्वयं को व समाज को उन्न बना सकूं। इसलिए ऐसी घटनाओं व समाज में हो रहे अन्य दुर्व्यवहारों को रोकने के लिए मानव की बुद्धि व मन को नियन्त्रित करना अत्यन्तावश्यक है और वह होगा चारित्रिक शिक्षा से।

2. **कठोर नियम बने व उसका अनुपालन हो**-हमारे ऋषियों ने समाज में मानव विकृतियों को नियन्त्रित करने लिए कठोर नियमों का निर्धारण किया है। मनुस्मृति में भिन्न-भिन्न अपराधों के लिए दिए जाने योग्य कठोर दण्डों का वर्णन आया है।

मनु के अनुसार-

दण्ड: शास्ति प्रजा: सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्ड: सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधा:॥ 7.18॥

अर्थात्-दण्ड ही प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है इसलिए बुद्धिमान् लोग दण्ड ही को धर्म करते हैं। कठोर दण्ड से ही मनुष्यों में डर व्यास होता है जिससे वे गलत कार्यों में प्रवृत नहीं होते। यह ठीक है कि आज भी भारतीय संविधान में कठोर नियम हैं लेकिन केवल नियम का होना ही पर्याप्त नहीं बल्कि उसका अनुपालन भी अत्यावश्यक है। अयोग्य शासनकर्त्ताओं के होने से नियम व्यवस्था की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है। भ्रष्टाचार के द्वारा घुण की तरह खाए जा रहे समाज में कठोर नियमों का महत्व उनके अनुपालन के अभाव में समाप्त हो गया है। इसलिए आज के समय की यह आवश्यकता है कि इस प्रकार के अपराधों की समाप्ति के लिए कठोर कानूनों को बनाकर उन्हें लागू भी अवश्य किया जाए जिससे समाज में भयमुक्त वातावरण बन सके।

3. **अश्लीलता पर रोक लगाई जाए**-आज जितना मानव अपने को प्रगतिशील घोषित कर रहा है वहां उसकी प्रगति का एक पक्ष यह भी है कि उसने अश्लील बोलने, देखने तथा दिखाने में वृद्धि की। एक तरह से अश्लीलता बढ़ाना प्रगति करने का मापदण्ड बन गया है। दिन-दिन टी. वी., इण्टरनेट, समाचारपत्रादि संचार के माध्यमों पर दुष्कर्म बढ़ने का रोना रोया जाता है। क्या किसी वृक्ष को खाद-पानी आदि जीवन के लिए आवश्यक तत्त्वों को दिए जाते हुए बढ़ने से रोका जा सकता है? समाज में बढ़ रही अश्लीलता दुष्कर्म की भावना बढ़ाने में खाद-पानी का कार्य करती है। यह संसार का नियम है कि यदि किसी वृक्ष को बढ़ने से रोकना या सुखाना हो तो उसे खाद-पानी-वायु

(शेष पृष्ठ 17 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य समाज हमारी 'माँ' हैं

वैदिक मन्त्रोंच्चारण से प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में आर्य प्रादेशिक पतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने उपस्थित सभी प्रधानाचार्यो को कहा कि हमेशा स्मरण रहे कि आर्य समाज हमारी **'माँ'** है। **'माँ'** का स्थान हमेशा प्रथम होता है। उसके संस्कारों पर ही सम्पूर्ण परिवार की नींव रखी होती है। डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाए भी आर्य समाज रूपी **'माँ'** की ही देन है। हमें सदैव आर्य संस्कारों का प्रचार प्रसार अपने प्रत्येक माध्यम से करना है। हमें इस बात का गर्व है कि केवल डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के पास ही आर्य समाज रूपी **'माँ'** उपलब्ध है। हर कार्य इससे प्रेरणा लेकर करें।

श्री पूनम सूरी जी ने अपने वक्तव्य में डी.ए.वी. की उपलिब्धयों को बताते हुए आर्य समाज की प्रमुखता पर बल दिया। और प्रधानाचार्यो एवम् शिक्षकों से अनुरोध किया कि अपने जीवन को आर्यमय बनाओ, स्वयं प्रेरणास्रोत बनो, बच्चे स्वयं आकर्षित होंग और आपका अनुकरण करेंगे। जीवन में **स्वाध्याय, सेवा, संध्या** करते रहो।

''डी.ए.वी. संस्थान शिक्षा की विश्वस्तरीय चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं क्योंकि उनका दृष्टिकोण परिवेश की वास्तविकताओं से विकसित होता है। हम अध्ययन-अध्यापन के अपने औजारों पर नई धार लगाने के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। शिक्षण-प्रशिक्षण की नई तकनीकों को अपनाने के लिए हम शिक्षक-शिक्षिकाओं को निरंतर प्रेरित करते हैं। इन सबके साथ-साथ हम अपने विद्यार्थियों में देश और समाज के प्रति लगाव की भावना का विकास करते हैं।''

श्री सूरी ने आगे अपने सम्बोधन में कहा कि हम शिक्षा के क्षेत्र में सुविचारित प्रयोगों को अपनाने के लिए सदैव उत्साहित रहते हैं। इसलिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने हमारे अनेक विद्यालयों को 'स्कूल ऑफ न्यू जैनरेशन' कहा है, श्री सूरी ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया कि डी.ए.वी. शिक्षा संस्थानों की सफलता का रहस्य उनके कुशल एवं प्रभावशाली प्रबंधन में निहित है।

डी.ए.वी. कई वर्षो से शिक्षा के महायज्ञ में अपने प्रयासों की आहुति दे रहा है। आज डी.ए.वी. आंदोलन देश भर में 980 से अधिक शिक्षा संस्थानों का संचालन कर रहा है। इनमें विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शामिल है। आज श्री पूनम सूरी द्वारा डी.ए.वी. आंदोलन की कमान सम्भालने के बाद इसमें कई नए आयाम जुड़े हैं। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण का संदेश विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है। नए प्रयोगों के प्रति सम्मान बढ़ा है। विभिन्न संस्थानों के शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच सक्रिय संवाद बढ़ा है। हमारे विद्यार्थी अच्छे अंक ही नहीं प्राप्त करें, बल्कि भविष्य के अच्छे नागरिक भी बनें, आज हमारी चिंता का प्रमुख मुद्दा है।

विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती प्रेम लता गर्ग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि विद्यालय ने शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों के क्षेत्र में जो नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, वे डी.ए.वी. आंदोलन के प्रमुख श्री पूनम सूरी जी के मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आज श्री पूनम सूरी जी ने जिस नव - विकसित सभागार का लोकार्पण किया है, वह संत महात्मा आनंद स्वामी की स्मृति को समर्पित है क्योंकि उनका जीवन साधारणता में असाधारण का एक बड़ा उदाहरण है। हमारे विद्यार्थियों के लिए उनका जीवन एक मशाल का कार्य करेगा।

इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. आंदोलन के पदाधिकारियों, अधिकारियों एवं दिल्ली तथा एन.सी.आर. के डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रबंधक श्री एस.सी.गुप्ता ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

निरंतर अपने पांच वर्षीय कार्यकाल में आपने आर्य समाज की गतिविधियों को जिस प्रकार से डी.ए.वी. के साथ जोड़ा है वह सराहनीय योग है। आपके सख्त आदेशानुसार डी.ए.वी. के प्रत्येक विद्यालय अथवा सार्वजनिक कार्यक्रमों का प्रारंभ यज्ञ से ही होगा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इनकी दीर्घ आयु हो और देव दयानन्द के वेद प्रचार कार्यो को इसी प्रकार दीर्घता से आगे बढ़ाते रहे।

क्या संस्कृत पढ़ने वाले अब नहीं है?

समाज में एक भ्रम फैलाया गया है कि संस्कृत कोई पढ़ना नहीं चाहता केवल गुरुकुलों के छात्र जबरदस्ती में पढ़ते है क्योंकि संस्कृत पड़े को नौकरी नहीं मिलती। उसे केवल अध्यापक अथवा पंडित पुरोहित ही बनना पड़ता है। मेरा एक प्रश्न है कि जो संस्कृत के लिए कहा जाता है कि संस्कृत के स्नातक को नौकरी नहीं मिली क्या और विषयों के स्नातकों एक स्नातोकर युक्त हेतु नौकरीयों कि भ्रमार हैं क्या, नहीं वह भी आज बिना नौकरी के है। हमारे देश में बी.ए. की उपाधि करने के बाद, आप प्रतियोगी परीक्षा पास कर नौकरी पा सकते हैं। जो संस्कृत विषय लेकर स्नातक बनते हैं उनके लिए किस प्रतियोगी परीक्षा के द्वारा बंद है? स्नातक बनने के पश्चात् अधिकतर छात्र एम.बी.ए. करते हैं। क्या संस्कृत से स्नातक नहीं कर सकते? संस्कृत के छात्र यू.पी.एस.सी. परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं। हमारे गुरुकुल के कई यू.पी.एस.सी. परीक्षा में उत्तीर्ण हुये है, संस्कृत का युवक आई.ए.एस. इसी वर्ष हुआ।

हमारे गुरुकुलों के छात्र आज कम्प्यूटर विज्ञान कि शिक्षा लेकर संस्कृत भाषा की प्रथम कक्षा से आगे तक पढ़ाने का पूरा सॉफ्टवेयर बना चुके है। यह गुरुकुल के कुछ छात्रो ने मिलकर बनाया हैं और बेंगलूर में स्थित हैं। डी.ए.वी. के प्रकाशन विभाग के प्रमुख श्री एस. के. शर्मा जो ने उन छात्रों के कार्य को देखा और उनके प्रयास कि भरपूर सहराना कि, श्री एस.के. शर्मा जी स्वयं संस्कृत को प्रोफेसर रहे है और डी.ए.वी. कांगड़ा हिमाचल प्रेदश से प्राचार्या सेवानिवृत हुये है।

हमारे टंकारा गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त ब्रह्मचारी दिल्ली विश्व विद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त कर संस्कृत में अब पी.एच.डी. पिछले तैयारी कर रहा है।

आज पूरे विश्व में योग की मांग बड़ रही है जिन्होंने संस्कृत में स्नातक अथवा स्नातकोतर किया है वही योग दर्शन को पढ़ सकता है। अंग्रेजी माध्यम वाला छात्र योग दर्शन नहीं पढ़ सकता, इसी प्रकार आयुर्वेद के क्षेत्र में भी बहुत सम्भावनाए बड़ रही है। परन्तु आयुर्वेद चरक संहिता इत्यादि के लिए संस्कृत की जानकारी प्रथम आवश्यकता है। हमारे आर्य पद्धति से पढ़े छात्र आज देश ही नहीं अपितु विश्व में भी इन माध्यमों से अपनी जीविका अर्जित कर रहे है। किसी आई. पी.एस, आई.ए.एस. से भी अधिक, वैदिक आर्ष गुरुकुलों से पढ़े स्वामी रामदेव जी ने पूरे विश्व में कमाल कर दिखाया, हम भूले नहीं। 1970-80 के दशक में गुरुकुल से पढ़े श्री सत्यदेव भारद्वाज विश्व प्रसिद्ध सन फ्लेग इडस्ट्रीज के संस्थापक बने, जिन्होंने अफ्रीका और यूरोप में अपने व्यवसाय का डंका बजाया था।

भारत से प्रेरणा लेकर विश्व के कई बड़े विश्वविद्यालयों ने संस्कृत विभाग और कक्षाये प्रारम्भ की है। अमेरिका, जर्मन, रूस, जापान, चीन जैसे देशों से संस्कृत के पंडित मिल जायेंगे परन्तु भारतीय संस्कृत पड़े शिक्षको कि आवश्यकता बढ़ रही है।

अब तो केन्द्र सरकार द्वारा योजनापूर्वक व्यवसाहिक विद्यालयों में भी ऐच्छिक रूप से संस्कृत विषय पाठ्यक्रम का विभाग है।

जहाँ तक विद्यालय शिक्षा का सम्बन्ध है सर्वाधिक शिक्षिक अंग्रेजी भाषा के हैं। तत्पश्चात् संस्कृत का ही क्रम आता है। उच्च शिक्षा में तो संस्कृत प्राध्यापकों की संख्या सर्वाधिक है, कारण सामान्य महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत की शिक्षा दी जाती है। इस कारण प्राध्यापक भी नियुक्त होते हैं। इसके अलावा 15 की संख्या में संस्कृत के विश्वविद्यालय हैं। इतनी संख्या में तो किसी विषय के विश्वविद्यालय नहीं है। प्रत्येक संस्कृत विश्वविद्यालय में कम से कम साहित्य, व्याकरण, दर्शन, वेद, ज्योतिष एवं शिक्षाशास्त्र ये विभाग तो होते ही हैं। अत: प्रत्येक विभाग में आचार्य, सह-आचार्य, सहायक आचार्य ये तो पद सृजित किये ही जाते हैं इस कारण महाविद्यालय प्राध्यापकों की संख्या बढ़ जाती है।

जहां तक पुरोहितों का प्रश्न है, वे तो 8 वर्ष की अवस्था में गुरुकुल में प्रविष्ट होते हैं। वहाँ 6 से 12 वर्ष तक वेदाध्ययन कर गुरुकुल के विद्यार्थी पौरोहित्य करने लगते हैं। समाज में पुरोहितों की आवश्यकता अधिक होने के कारण विद्यार्थी-ब्रह्मचारियों को 14वें वर्ष में ही दक्षिणा के रूप में धन प्राप्त होने लगता है। इस प्रकार का कौन सा पाठ्यक्रम भारत में है जो आयु के 14वें वर्ष से ही धन देने लगे? और तो और क्या यजमान और क्या उसकी पत्नी उसके घर के सभी व्यक्ति पुरोहित के चरण स्पर्श करते हैं। अत: निवेदन है कि संस्कृत भाषा के अध्ययन से अर्थार्जन कैसे होगा यह चिन्ता त्यागें और अधिक मात्रा में संस्कृत सीखें।

लेकिन यहां दूसरा पक्ष भी है। जिसकी जानकारी इस वर्ष टंकारा बोधोत्सव पर पधारे गुरुकुल कांगड़ी के डॉ. रूप किशोर जी द्वारा मुख्य मंच से दिये उनके उद्बोधन से प्राप्त हुई। डॉ. रूप किशोर जी कई विश्वविद्यालयों से जुड़े रहे और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्धवान है। संस्कृत के प्रति उनके हृदय में जो टीस है उसे सुन सभी उपस्थित जन प्रभावित हुए। आप कई वर्षो तक मानव संसाधन मंत्रालय में सचिव पद पर रहे और शिक्षा सम्बन्धी कई योजनाओं में आपका योगदान भारत सरकार को प्राप्त होता रहा। इस संदर्भ में आपने बताया कि शिक्षा मंत्रालय किसी भाषा के विकास के लिये किस प्रकार कार्य करती है, किस भाषा को कितना महत्व देना है। यह सरकार कैसे निश्चित करती है, कि जानकारी के तथ्य चौका देने वाले थे सारी भाषाओं में संस्कृत भाषा को महत्व देने का नम्बर सबसे अन्तिम श्रेणी में है। सरकारी आकाड़ो के आधार पर संस्कृत सबसे कम महत्व प्राप्त भाषा मानी जा रही है। जिसका मुख्य कारण है जो आंकड़े जनगणना से प्राप्त होते है। उसी से सारी योजनाएं सरकार बनाती है और पिछली जनगणनाओं में आए आकड़ो में अपनी भाषा को लोगों द्वारा संस्कृत है, लिखने वाले इतने कम है कि संस्कृत किसी गिनती में ही नहीं है। आप ने मंच से आवाहन किया कि आने वाली जनगणना में अपनी भाषा संस्कृत लिखवाये, कम से कम अपने को आर्य कहने वाले, प्रतिदिन संस्कृत में यज्ञ करने वाले, संध्या करने वाले तो लिखवाये कि हमारी भाषा संस्कृत है, इससे ही काफी फर्क पड़ सकता है। केवल गायत्री मन्त्र का जाप करने वाले भी तो संस्कृत का ही उच्चारण करते हैं।

आओ मिलकर संस्कृत को भारत की सबसे महत्व वाली भाषा बनाये।

अजय टंकारावाला

ईश्वर से क्या मांगे

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

मेरे घर से बाजार के रास्ते में एक मंदिर पड़ता है। अक्सर बाजार जाते समय मैं वहां कौतुक होते देखता हूं। मंदिर का पुजारी भी कुछ विचित्र किस्म का लगता है पर मुझ से खुलकर बात करके हंस लेता है। एक दिन बाजार जाते हुए मैं मन्दिर के बाहर रूक गया। अभी आरती का समय नहीं हुआ था सो पंडित जी बाहर ही खड़े थे। तभी दो लड़कियां स्कूटी पर वहां से निकली और हाथ हिला कर जोर से 'हाय हनु' कहकर चली गई। मैं चौंका तो पंडित जी हंस पड़े बोले ''महाशय जी इनके पास समय कहां है यह पूरी भाम बाजार में दोस्तों के साथ फलर्ट करके चाउमिन पिज्जा खायेंगी, अब यही फलर्ट भगवान के साथ भी करने लगती हैं।'' पंडित जी की बात सुनकर मेरी रूचि और बढ़ गई। मैंने पूछा ''पर पंडित जी यह ऐसा करके आपके इस भगवान से मांगते क्या हैं?'' पंडित जी बोले ''मत पूछिये जनाब इनकी कैसी अनोखी मांग होती है। कोचिंग के बहाने दोस्तों के साथ मटरगश्ती और पेपरों के दिनों में हे भगवान पास करवा देना व्रत रखूंगी। लड़के आयेंगे हे भगवान फलां लड़की पट जाये मैं प्रसाद चढ़ाउंगा। नौकरी लग जाए तो दान दूंगा। एक भक्त आया और बोला पंडित जी प्रार्थना कर दो लाटरी लग जाए तो सवा मनी कर दूंगा। अगर फ्लैट मिल गया तो माता पर जाकर आउंगा। एक तो पड़ोसी के नुकसान की मन्नत मांग कर गया। बस महाशय जी आजकल तो लोग भगवान से यही कुछ मांगते हैं।'' पंडित जी की बात सुनकर मैं बरबस जोर से हंस पड़ा ''पंडित जी लोग यहां ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करते हैं या व्यापार?'' पंडित मेरा आशय समझकर कुछ संजीदा हो गया ''महाशय जी यह तो मुझे नहीं पता लेकिन इनके चढ़ावे से मेरा गुजारा अच्छा चल जाता है।'' मैंने हंसते हुए कहा ''ठीक है पंडित जी भगवान के नाम पर आपका व्यापार अच्छा चल जाता है।'' इतना कहकर मैं बाजार की तरफ चल दिया और सोचने लगा कैसा अंधवि वास है आजकल लोग भगवान से उपासना प्रार्थना के नाम पर सीधे-सीधे व्यापार करने लगे हैं।

यही सोचते चिंतन करते बाजार पहुंचा तो एक और कौतुक दिखाई दिया। किरयाने की दुकान पर एक आदमी कपड़ा देने की जिद कर रहा था और दुकानदार उस पर झल्ला रहा था। मैंने अपना सामान लेने से पहले दुकानदार से माजरा पूछा तो वह बोला ''महाशय जी, यह पागल है मेरी दुकान से कपड़ा मांगेगा, कपड़े की दुकान पर दाल-चावल पूछेगा''। दुकानदार की बात सुनकर मैं चिंतन में पड़ गया, अपना सामान लिया और सोचते हुए वापिस चल दिया।

मैं सोच रहा था क्या हम सबकी यही स्थिति तो नहीं है। पहले तो हम ईश्वर का सच्चा स्वरूप नहीं समझते और भगवान के ठेकेदार बनकर बैठे गुरुओं, डेरे, मंदिरों के पुजारियों, पीरों के पास अपनी ऐसी लम्बी चौड़ी मांग सूची लेकर पहुंच जाते हैं और फिर वहां ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए व्यापार करते हैं।

अब प्रश्न पैदा होता है कि हम ईश्वर से क्या मांगे? हमें ईश्वर क्या दे सकता है? लोग अक्सर कहते हैं ईश्वर तो सर्व शक्तिमान है वह प्रसन्न हो जाए तो कुछ भी और सब कुछ दे सकता है। जैसे ईश्वर ना हुआ सवामनी के वादे में हमने अपने काम के लिए ठेकेदार चुन लिया। क्या ईश्वर के सर्व शक्तिमान होने का यही अभिप्राय है। आर्य सिद्धांतों के अनुसार चूंकि सर्वव्यापी ईश्वर को अपने कार्यो अर्थात् सृष्टि के निर्माण, पालन, न्याय और संहार में किसी अन्य की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिए वह सर्वशक्तिमान कहलाते हैं। अब यदि ऐसे ईश्वर से हम अपने भौतिक सुख सुविधायें, नौकरी, धन, लाभ या भात्रु का विनाश मांगते हैं और स्वयं उसके लिए कोई पुरुषार्थ ना करके ईश्वर के किसी ठेकेदार से दान, दक्षिणा आदि का सौदा करने का प्रयास करते हैं तो हमारी स्थिति भी उसी अबोध पागल सरीखी है जो कि किरयाने की दुकान पर कपड़ा मांग रहा है।

हम ईश्वर से क्या प्रार्थना करें इसके लिए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सातवें सम्मुल्लास में स्पष्ट करके लिखते हैं-यां मेधां देवगणा: पितर चोपासते। तया मा मद्य मेधयाग्ने कुरू: स्वाहा। यजु. 32/14 अर्थात् हे प्रकाश स्वरूप परमे वर आपकी कृपा से जिस बुद्धि की उपासना विद्वान, ज्ञानी और योगी लोग करते हैं उसी बुद्धि से युक्त हमको इसी वर्तमान समय में आप बुद्धिमान कीजिए।

महामन्त्र गायत्री के द्वारा भी हम धियो यो न: प्रचोदयात् कहते हुए ईश्वर से मेधा बुद्धि की कामना करते हैं।

शिव संकल्प मन्त्रों में भी हम भुाभ संकल्पो वाली मेधा बुद्धि की कामना करते हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि ईश्वर से उपासक को उपासना करते हुए उज्ज्वल भावों, भुाभ संकल्पों, मेधा, बुद्धि, परोपकार के कार्यो के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए उन सर्वहितकारी कार्यो की सफलता में सहायता, भक्ति, पराक्रम, बुद्धि देने की कामना करनी चाहिए।

- 602, जी.एच. 53, सैक्टर-20, पंचकूला, मो. 0967608686

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 21 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

भारतीय नारी का स्वरूप, दायित्व एवम् समस्याएँ

❒ सुश्री रितु गुप्ता

नारी ईश्वर की एक अद्‌भुत रचना है। वर्तमान युग में सब ओर स्वतन्त्रता की आकांक्षा जागृत हो रही है। ऐसे में भला नारी कहां अछूती रहती है? नारी हृदय में भी आजादी होना स्वाभाविक है। आरम्भ से ही चित्रकार, कविगण एवं काव्य द्वारा नारी के यौवन को कल्पना के धागे में बाँध कर अमरत्व प्रदान किया गया है।

स्त्री घर की सम्राज्ञी होने पर भी एक स्नेहमयी माता और आदर्श गृहिणी के रूप में उसका एकछत्र राज्य है। इसीलिए तो कहा गया है कि दस शिक्षकों से श्रेष्ठ आचार्य है, सौ आचार्यो से श्रेष्ठ पिता है और हजार पिताओं की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ, वंदनीया और आदरणीय माता है। भगवान् श्री राम-कृष्ण, भीष्म-युधिष्ठिर, कर्ण-अर्जुन, बुद्ध-महावीर, गाँधी-मालवीय, शंकर-रामानुज आदि जगत् के सभी बड़े-बड़े पुरुषों को नारी ने ही सृजन किया और बनाया। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि नारी एक साधारण नारी न होकर वस्तुतः स्नेहमयी जननी है।

नारी के हृदय में प्राणों की प्रधानता है और पुरुष-हृदय में शरीर की। पुरुष उतने त्याग की कल्पना भी नहीं कर सकता, जितना त्याग नारी सहज ही कर सकती है। शक्ति का महत्व अन्यतम है, बिना शक्ति के शिव भी शव के समान है। शिव की शक्ति पार्वती है जो शिव की शक्ति तथा कर्मण्यता का प्रतीक है।

नारी को बाल, युवा और वृद्धावस्था में जो स्वतन्त्र न रहने के लिए कहा गया है, वह इसी दृष्टि से कि उसके शरीर की नैसर्गिक संघटना ही ऐसी है कि उसे सदा एक सावधान पहरेदार की जरूरत है। क्योंकि उसकी शारीरिक स्वाधीनता सर्वत्र सुरक्षित नहीं है। परन्तु दैहिक, सहिष्णुता, सेवा, त्याग, तपस्या आदि सद्‌गुण सत्-स्त्री की सेवा में सदा लगे ही रहे हैं। स्त्री में स्वभाव से ही इन गुणों का विकास रहता है।

अपनी आत्मशक्ति के कारण ही आज भारतीय नारी के समक्ष देश का विस्तृत एवम् विकासोन्मुख क्षेत्र है। खोए हुए व्यक्तित्व को नारी ने पुनः प्राप्त कर लिया है। नारी समाज की परिस्थितियों और देश के साहित्य पर भी अमिट छाप छोड़ती आई है। जीवन के अनेक ज्वलन्त पदार्थ हैं जिनसे उनको रूबरू होना पड़ रहा है। नारी ने इस समस्याओं को भी चुनौती समझ कर स्वीकार किया है लेकिन कहीं न कहीं ये आदर्श समाज में बाधक भी हो रहे हैं।

नारी की समस्याएँ- मध्यवर्गीय या निचले स्तर की नारी की सबसे बड़ी विवशता है-आर्थिक पराधीनता। इसके चलते वह पुरुष के हर प्रकार के अत्याचारों को झेलने के लिए बाध्य हो जाती है। पुरुषों की ठोकरें खानी पड़ती हैं। जगह-जगह प्रेम से बचना पड़ता है, नौकरी के लिए नए-नए मालिकों के दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं और 'नो वेकेंसी' की सूचना पढ़कर निराश भी लौटाना पड़ता है। आज की नारी दोहरी भूमिका (घर और बाहर) दोनों क्षेत्रों में निभा रही है। स्वयं कमाते-कमाते वह दोहरे बोझ से दब गई है। पारिवारिक जीवन की सरलता जटिलता में परिवर्तित हो गई है।

सामाजिक कुरीतियों में दहेज प्रथा एवं लिंगभेद बड़ी समस्याओं के रूप में उभर कर सामने आई हैं। महिला-साक्षरता हजारों सामाजिक बीमारियों की एकमात्र औषधि है। महिला-साक्षरता ने यह प्रभावित कर दिया है कि जनसंख्या पर काबू पाने के लिए साक्षरता की राह पर चलना होगा। बालशिक्षा (विशेषकर कन्याओं की शिक्षा), सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। 88 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं रक्त-अल्पता की शिकार होती हैं। देश की 40 प्रतिशत शिशु मृत्यु दर का कारण माता की रक्त-अल्पता होता है।

जीन ड्रेज व अमर्त्य सेन के अनुसार महिलाओं के प्रयत्नों व साक्षरता में विस्तार के मध्य महत्वपूर्ण सह-निर्भरता है। केरल राज्य को उत्तर प्रदेश से एकदम विपरीत बना दिया है। यहां की दो तिहाई प्राइमारी स्कूल शिक्षिकाएं महिलाएं हैं (उत्तर प्रदेश में 18 प्रतिशत के मुकाबले)। लिंगों के मध्य पूर्ण समानता सभी क्षेत्रों में महसूस होनी चाहिए। समाज में पुरुषों के बराबर का दर्जा दिलाने के लिए पुरुषों की भागीदारी नितान्त आवश्यक है। अपने अधीन न समझकर बराबर का दर्जा देने की सोच को पुरुषों को विकसित करना होगा ताकि दोनों के बीच की खाई को पाटा जा सके एवं देश-राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख हो सके।

नारी है पुरुष की सहचरी।
समान मानसिक क्षमताओं से प्रदत्त।
उसको अधिकार है पुरुष की
गतिविधियों के सूक्ष्मतम पहलुओं में
भागीदारी का और,
उसको समान अधिकार है उसके
साथ स्वतन्त्रता एवं मुक्ति का।

महात्मा गांधी-1917

महिलाओं व लड़कियों के प्रति हिंसा तथा अत्याचरण आज दुनिया में मानव अधिकारों का सबसे व्यापक उल्लघंन है। जागरूकता के अभाव में महिलाएं उनके खिलाफ आवाज नहीं उठा पा रही हैं और शोषण का शिकार हो रही हैं। ऐसे अत्याचारों के लिए सम्पूर्ण नारीजाति को आवाज उठानी होगी। नारी ही देवी है, नारी ही दुर्गा व चण्डी है। आवश्यकता है इस बात को चरितार्थ करने की। विकास विरोध के बिना नहीं हो सकता। जब तक नारी में आत्म चेतना नहीं आएगी विकास नहीं हो सकता।

वक्त का तकाजा है तूफाँ से जूझो,
आखिर कब तक चलोगे किनारे-किनारे।

एक समय था जब स्त्री को बचपन में पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन, बुढ़ापे में पुत्र अधीन रहना पड़ता था। आज के आधुनिक समाज में स्थितियां कुछ बदलती जा रही हैं। किन्तु जागरूकता इतनी हो न कि नारी अपना अस्तित्व ही भूल जाये उसको यह भी ध्यान रखना होगा कि नारी समाज में जितना आदर है वह विद्यमान रहे-अति सर्वत्र वर्जयेत् के आधार पर वहीं यदि धीरे-धीरे मर्यादा में रहती हुई आगे बढ़ेगी तो वह निश्चित ही भारत को भा-रत बनाने में सक्षम होगी।

परन्तु पिछड़े क्षेत्रों में आज भी नारी-जाति चुपचाप समस्याओं को झेल रही है। आखिर ऐसा क्यों? क्या वास्तव में नारी इतनी सबल नहीं

है कि वह अपनी समस्याओं को बौना कर सके? पर अब भी कहीं न कहीं पर वह अपने पिछले समाज से आजाद नहीं है।

मेरे विचार से तो नारी सशक्त है, बस उसमें आत्मविश्वास, धैर्य, प्रयत्न व लालसा की कमी है जो उसे संगठित होकर ही मिल सकती है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, एकता में शक्ति जैसे सिद्धान्त को मानकर महिलाओं को अपने विरोध में उठने वाली हर आवाज के प्रति संगठित होना होगा। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया। सन् 1973 को अन्तराष्ट्रीय महिलावर्ष के रूप में मनाया गया।

स्त्रियों की दशा में सुधार हुए बिना विश्व के उत्थान का कोई दूसरा मार्ग नहीं है। -स्वामी विवेकानन्द

कल दिया था, आज भी देगी, नारी है न, बलिदान तो देगी।

नर से बढ़कर नारी है। आज नारी के 33 प्रतिशत आरक्षण की मांग हो रही है। उसकी दुहाई दी जा रही है पर यदि देखा जाय तो आरक्षण से अधिक महत्वपूर्ण है कि स्त्री अपने गढ़े हुए बनावटी व्यक्तित्व से अपने को मुक्त करें। इसी से महिला सशक्तिकरण अभियान को वास्तविक सार्थकता प्राप्त होगी। इसी से नारी का सम्मान होगा, नारी के सम्मान से भारत में एक बार पुनः देवावतरण होकर रहेगा, जब कारण होगा तो कार्य भी होगा ही और कारण स्पष्ट है क्योंकि ऋषियों की मान्यता तथा कथन है कि-यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। अतः एक बार सच्चे हृदय से जब नारीजाति का सम्मान होगा तो यह धरा धरा न रहकर स्वर्गतुल्य ही होगी।

- हिन्दी प्रवक्ता, एस.डी. कॉलेज (लाहौर), अम्बाला कैण्ट

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

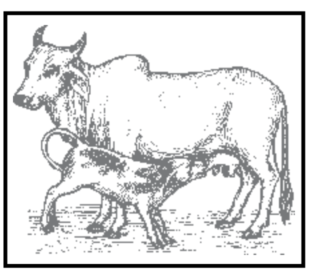

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

संबंधों को ठीक बनाए रखने के लिए स्नेह की कुछ बूंदे

❒ सीताराम गुप्ता

कुछ दिन पहले की बात है कि एक ऐसा ताला खोलने का अवसर मिला जो काफी समय से बंद पड़ा था। पहले तो चाबी के छेद में चाबी ही बड़ी मुश्किल से घुसी और जब उसे घुमाने की कोशिश की तो फिर वो अटक गई। चाबी को कई बार दाएं-बाएं घुमाने पर ही बड़ी देर के बाद ताला खुल पाया। कुछ देर बाद जब पुनः ताला बंद करने की कोशिश की तो वह अड़ गया। उसने बंद होने से पूरी तरह मना कर दिया। ताला बंद करने के लिए खूब ज़ोर लगाया पर सब बेकार। ताला तो बंद करना ही था अतः उसकी अकड़ को ढीला करने के लिए उसमें दो बूंद तेल टपका दिया। तेल डालना था कि उसकी अकड़ जाती रही। ताले की कुंडी अथवा शैक्ल आराम से ऊपर-नीचे होने लगी और अपने स्थान पर फिट हो गई। चाबी भी सरलतापूर्वक घूमने लगी। सारा अवरोध समाप्त हो गया जिससे ताला आसानी से बंद हो गया।

ताले की अकड़ कम करके उसे बंद करने में जो सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका थी वह तेल की दो बूंदों की थी। तेल ईंधन के रूप में ऊर्जा का स्रोत ही नहीं मशीनों को बिना घर्षण के चलाने में भी सहायक होता है। तेल को स्नेह भी कहा जाता है। घर्षण कम करने के लिए मशीनों के गति करने वाले कल-पुर्ज़ों में तेल डाला जाता है जिसे स्नेहन कहते हैं। स्नेहन अर्थात् लूब्रिकेशन। इससे मशीनें बिना कर्कश आवाज़ किए आसानी से चलती हैं और कम घिसती हैं। लौह आदि विभिन्न धातुओं की ज़ंग लगी वस्तुओं अथवा मशीनों पर ही नहीं मनुष्यों पर भी स्नेहन अथवा लूब्रिकेशन बख़ूबी काम करता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भी हम अपने शरीर पर तेल लगाते हैं अथवा मालिश करते हैं। जितना यह भैतिक शरीर व जड पदार्थों पर कारगर होता है मानवीय संबंधों के निर्माण व विकास में यह उससे भी अधिक कारगर है।

संबंधों के सही निर्वहन अथवा परिचालन में भी स्नेह की अत्यंत आवश्यकता होती है। स्नेह के अभाव में ही हमारे आपसी संबंध ज़ंग लगी मशीनों की तरह हो जाते हैं। ऐसे संबंधों में जब भी संवाद स्थापित करने की ज़रूरत पड़ती है या तो वे ज़ंग लगे तालों की तरह अटक जाते हैं या फिर पुरानी ज़ंग लगी मशीनों की तरह खड़खड़ करने लगते हैं। ऐसे में संवाद द्वारा किसी उचित निष्कर्ष पर पहुंचना संभव ही नहीं हो सकता। स्नेह अथवा प्यार के अभाव में उन्हें पटरी पर लाना संभव ही नहीं। हमारे संबंधों में स्नेहन के कई रूप हो सकते हैं। स्नेहन का एक रूप है हम सबके लिए केवल अच्छे शब्दों का प्रयोग करें। हमारे शब्दों में दूसरों के लिए आत्मीयता व सम्मान होना चाहिए। दूसरों की अच्छी आदतों व कार्यों के लिए हमेशा प्रशंसा की जानी चाहिए। इससे व्यक्ति का आत्मसम्मान बढ़ता है और वो अपनी क्षमता से बढ़कर कार्य करने को तत्पर हो जाता है।

लोगों की उपेक्षा करने की बजाय हमें उनमें रुचि लेनी चाहिए। लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे आपसी विश्वास में वृद्धि होती है। समाज में सामंजस्य उत्पन्न होता है। दीर्घ काल तक उपेक्षित व हतोत्साहित कोई भी व्यक्ति ज़ंग लगे ताले अथवा मशीन जैसा ही हो जाता है। उसमें निराशा उत्पन्न होने लगती है। ऐसे व्यक्ति से अच्छे संबंध बनाए रखना कठिन हो जाता है। इस स्थिति को आने न देने में ही समझदारी है। स्नेहपूर्ण सामान्य शब्दों का भी हमारी बातचीत व आपसी संबंधों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इससे माहौल खुशगवार बना रहता है। यदि हम ऐसा माहौल बना पाते हैं तो इसका सबसे अधिक लाभ हमें ही मिलता है। ज़िद्दी अथवा उद्दण्ड बच्चों पर दण्ड नहीं स्नेह सही काम करता है। स्नेह के अभाव में लोग असभ्य व अमानवीय व्यवहार करने लगते हैं।

स्नेहन का एक अन्य रूप है स्नेहपूर्ण आत्मीय स्पर्श। जब हम स्नेह के वशीभूत होकर किसी को स्पर्श करते हैं तो संबंधों पर जमी बर्फ की मोटी परत को पिघलते देर नहीं लगती। एक स्नेहपूर्ण आत्मीय स्पर्श मन में व्याप्त राग-द्वेश रूपी कोहरे को साफ करके संबंधों में ऊष्मा भर देने में पूरी तरह से सक्षम है। हज़ारों प्यार भरे शब्दों से अधिक प्रभावशाली होता है एक आत्मीय स्पर्श। जब हम अपने अंदर स्नेह का स्रोत प्रवाहित कर लेते हैं तो हमारे शरीर व हाथों की हथेलियों व उंगलियों के अंदर एक जादुई शक्ति प्रवाहित होने लगती है जिसके प्रभाव से हम जिसे स्पर्श करते हैं वो अपेक्षित सकारात्मक प्रतिक्रिया करने को विवश हो जाता है। संबंधों को हमेशा अच्छे बनाए रखने व तनावपूर्ण अथवा ख़राब संबंधों को ठीक करने का यही एकमात्र प्रभावशाली उपचार है।

स्नेह का एक रूप है किसी को मन से स्वीकार करके उसके प्रति चिंता व सहयोग की भावना रखना। जब हम किसी के लिए मन से कोई कार्य करते हैं अथवा सहयोग करते हैं तो इससे जिन संबंधों का निर्माण व विकास होता है वे अत्यंत आत्मीय व महत्त्वपूर्ण संबंध बन जाते हैं। उन्हें कभी नहीं भुलाया जा सकता। उनमें विषम परिस्थितियों में भी कभी तिक्तता अथवा वैमनस्य उत्पन्न नहीं हो सकता। एक सात-आठ साल की कमज़ोर और दुबली-पतली लड़की अपने से दो-एक साल छोटे एक हृष्ट-पुष्ट बच्चे को गोद में उठाकर तेज़ी से चली जा रही थी। एक राहगीर ने जब ये देखा तो उसने उत्सुकतावश लड़की से पूछा, ''बेटा इतना बोझ उठा कर भी तुम इतनी तेज़ी से कैसे चल लेती हो?'' ''बोझ नहीं ये मेरा भाई है'', लड़की ने राहगीर को जवाब दिया और ख़ुशी-ख़ुशी अपने मार्ग पर आगे बढ़ गई। स्नेह के कारण ही हम असंभव से लगने वाले कार्य भी कर पाते हैं जबकि स्नेह के अभाव में मामूली काम भी अटके पड़े रहते हैं। उनको करने में आनंद नहीं आता। स्नेह सफलता प्रदान करने में भी सहायक होता है।

लड़की अपने भाई को बहुत प्यार करती है अतः उसका भाई उसके लिए बोझ नहीं है। जिस व्यक्ति, वस्तु अथवा प्राणी को हम मन से चाहते हैं, जिसे प्यार करते हैं, अपना मानते हैं वह हमें बोझ नहीं लगता। उसकी हर चेष्टा, हर हरकत अच्छी ही लगती है और उसके लिए कुछ भी करना हमें प्रसन्नता प्रदान करता है। यही वास्तविक स्नेह है। स्नेह के वशीभूत ही हम किसी की प्रसन्नता का ध्यान रखते हैं। स्नेह के कारण ही हम दूसरों की सेवा कर पाते हैं। उसे जिस बात में सबसे ज़्यादा खुशी मिलती है वही हम करने का प्रयास करते हैं। स्नेह के कारण ही हम अपने प्रियजनों को समय-समय पर उपहार देते रहते हैं। समय पर किसी की बहुत ज़रूरी चीज़ें उपलब्ध करवाना भी स्नेह का ही एक रूप है। यह भी उपहार ही है। यदि किसी को अपनी बातें दूसरों को कहने या अपने मनोभावों को व्यक्त करने में आनंद की अनुभूति होती है तो उसके पास बैठकर ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनना भी स्नेह से कम नहीं।

आजकल कुछ लोग स्नेह अथवा नवनीतआलेपन या बटरिंग द्वारा अपना उल्लू सीधा करने में भी कम माहिर नहीं। कुछ लोगों को इसे करने में तो कुछ लोगों को इसे करवाने में मज़ा आता है लेकिन यह स्नेह नहीं कहा जा सकता। ऐसा व्यवहार केवल स्वाथपूर्ण संबंधों का निर्माण कर सकता है। इसके मूल में अनुचित कार्य करवाने अथवा झूठी प्रतिष्ठा पाने का भाव व्याप्त रहता है। स्नेह तभी उत्तम होगा जब ये हमारे मनोभावों को सकारात्मक रूप से परिवर्तित करने में सक्षम हो और मनोभावों में स्निग्धता उत्पन्न करे। यह हमारे व्यवहार से व्यक्त होना चाहिए मात्र शब्दों से नहीं। नन्हें शिशुओं की मासूमियत का कारण उनका आंतरिक स्नेह ही होता है। वे राग-द्वेष नहीं जानते। इसी कारण हर कोई उन्हें गोद में उठाने व प्यार करने को आगे बढ़ता है। हम नन्हे शिशुओं तथा बच्चों से स्नेह का सही रूप सीख सकते हैं। संबंधों की गाड़ी को असमय घिस-घिसकर टूटने-बिखरने से बचाने अथवा उसे कर्कश ध्वनि करने से रोकने के लिए उसमें स्नेह की कुछ बूंदे टपकाते रहना हमारे अपने व संपूर्ण समाज के हित में ही होगा।

-ए डी-106-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-110034, फोन नं 09555622323

विचार मोती

❐ श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

1. मन मुटाव भूलते रहिए। विचार, मिले, न मिले, मगर हाथ मिलाते रहिए।
2. अगर आप किसी के कठिन समय को सरल बना देते हैं तो आपको स्वर्गीय सुख अनुभव होगा।
3. किसी का भला करोगे तो भला होगा, बुरा करोगे तो बुरा होगा।
4. जिन्दगी को सुखी बनाने के दो तरीके हैं-जो पसन्द है उसे हासिल करना सीख लो और जो हासिल है, उसे पसन्द करना सीख लो।
5. भूल को बताने के लिए दूसरा चाहिए और भूल सुधारने के लिए कलेजा चाहिए।
6. सबसे पहले क्षमा करते हैं, से सबसे सुखी हैं।

- 52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (राज)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

वन्दना क्यों?

❒ प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

हम प्रभात वन्दन पर विचार कर रहे हैं। एक स्वाभाविक प्रश्न मन में उठता है। वन्दना क्यों करें? वन्दना का अर्थ ही क्या है?

हम वन्दे मातृरम् बोलते हैं और हमारे मन में भाव यह होता है कि हम अपनी मातृभूमि की वन्दना कर रहे हैं, मातृभूमि का गुणगान कर रहे हैं, मातृभूमि के गुणों का, विशेषताओं का स्मरण कर रहे हैं। यह सब क्यों? यह सब इसलिए है कि हममें मातृभूमि के प्रति प्रेम, श्रद्धा और आत्मीयता बलवती हो उठे। हम कभी-कभी मनुष्यों की वन्दना, स्तुति, प्रशंसा या गुणगान इसलिए भी करते हैं कि वे मनुष्य प्रसन्न होकर हमें कुछ दें, कुछ हमारे पक्ष में, हमारे हित के लिए कर दें। यही प्रशंसा या गुणगान इसलिए भी करते हैं कि वे मनुष्य प्रसन्न होकर हमें कुछ दें, कुछ हमारे पक्ष में, हमारे हित के लिए कर दें। यही प्रशंसा या गुणगान चापलूसी का भी रूप ले लेता है। सज्जन लोग चापलूसी जैसे गुणगान को अच्छा नहीं समझते। अच्छे, भक्त परमेश्वर की स्तुति करते हैं, चापलूसी नहीं।

हम परमेश्वर का गुणगान करें तो क्या परमेश्वर अपना गुणगान सुनकर हमारे अपराधों को, या हमारे पापों को क्षमा कर देंगे? उत्तर बिल्कुल सीधा है। भगवान् चापलूसी-पसन्द नहीं है। प्रभु गुणगान करने से हमारे पापों को क्षमा नहीं करेंगे औरनहीं ही बिना कर्म किये हमें कुछ अच्छा फल ही दे देंगे। हम इस संसार में ही देखते हैं कि जो व्यक्ति न्यायप्रिय हैं, जो व्यक्ति अच्छे चरित्र वाले हैं, वे किसी की चापलूसी सुनकर चापलूस के लिए कोई पक्षपात नहीं करते हैं। जब अच्छे चरित्र के सज्जन लोग ही किसी चापलूस की चापलूसी के कारण कोई पक्षपात नहीं करते हैं, तो क्या परमेश्वर चापलूसी पूर्ण वन्दना, प्रार्थना या स्तुति सुनकर किसी को उसके कर्मो से अधिक दे देंगे? परमेश्वर तो न्यायकारी हैं, उनके दरबार में न कोई चापलूसी चलती है, न कोई सिफारिश, न कोई संस्तुति चलती है, तो फिर हम प्रभु की प्रार्थना, वन्दना या स्तुति क्यों करें? प्रभु का गुणकीर्तन क्यों करें? प्रार्थना क्यों करें?

इस सम्बन्ध में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का एक उद्धरण सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में उपलब्ध होता है। इस सम्बन्ध में इस उद्धकरण का चिन्तन, मनन अति उपयोगी है। स्वामी जी ने प्रश्नोत्तर की शैली में लिखा है-

प्रश्न-परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए, या नहीं?

उत्तर-करनी चाहिए।

प्रश्न-क्या स्तुति आदि करने से ईश्वर अपना नियम छोड़ स्तुति, प्रार्थना करने वाले का पाप छुड़ा देगा?

उत्तर-नहीं।

प्रश्न-तो फिर स्तुति, प्रार्थना क्यों करना?

उत्तर-उनके करने का फल अन्य ही है।

प्रश्न-क्या है?

उत्तर-स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण-कर्म-स्वभाव से अपने गुण-कर्म-स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।

इस उद्धरण का अन्तिम अंश बहुत महत्वपूर्ण है। स्वामी जी लिखते हैं कि परमेश्वर की स्तुति करने से उसमें प्रीति और अपने गुण-कर्म-स्वभाव का सुधार होता है।

थोड़ा सा विचार करते हैं। हमारा अनेक बार का यह अनुभव रहा है, कि जब किसी सुयोग्य शिष्य को प्रातः भ्रमण, आसन व्यायाम, प्राणायाम आदि सिखाने का हमारे मन में भाव उठता था तो हम 4-6 दिन उसे कोलकाता के प्रसिद्ध परेड ग्राउण्ड मैदान में बुला लेते थे। वह शिष्य देखता था कि कुछ लोग दौड़ रहे हैं, कुछ लोग तीव्रगति से भ्रमण कर रहे हैं, वहीं कुछ लोग आसन, व्यायाम और प्राणायाम भी कर रहे हैं। कई बार शिष्य ऐसे लोगों के क्रियात्मक आचरण से प्रभावित होकर स्वयं भी कुछ करने लगते थे। इस प्रारम्भिक काल में हम ऐसे शिष्यों को योगियों और पहलवानों के जीवन चरित्र भी पढ़ने को कहते थे। गुणगान करने से मन में स्वतः अनुकरण करने की लालसा पैदा हो जाती है। महाराणा प्रताप की हल्दीघाटी की लड़ाई या आल्हा जैसे वीर रस प्रधान काव्य को सुनने पर मन में वीर रस का संचार होता है और उन वीर योद्धाओं के लिए मन में प्यार पैदा होता है। इसी प्रकार जब हम परमेश्वर का गुण गान करते हैं तो हमारे मन में परमेश्वर के लिए प्यार, आदर, लगाव आदि की भावनाएं उगने लगती हैं। धीरे-धीरे दया, करूणा, न्यायप्रियता आदि के भाव मन में उठने लगते हैं। यह सब ईश्वर के गुण कीर्तन का सुफल होता है।

स्वामीजी ने लिखा है कि परमेश्वर की प्रार्थना करने से मन में निरभिमानता, उत्साह और परमेश्वर की सहायता के भाव उदय होते हैं। प्रार्थना का अर्थ ही है कि हम परमेश्वर से कुछ याचना कर रहे हैं। जैसे कि हम प्रार्थना करते हैं-

'हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।'

इस तरह की हजारों प्रार्थनाएं हम करते हैं। कभी ज्ञान, कभी धन, कभी स्वास्थ्य, कभी और कुछ इत्यादि मांगने वाला अभिमान नहीं कर सकता। मांगने के लिए नम्र, विनयशील होना होता है। इसीलिए प्रार्थना करने वाला अभिमानी नहीं होता।

प्रार्थना करने से परमेश्वर की सहायता भी मिलती है। जब हम कुछ लेना चाहते हैं, तो हमें लेने का पात्र भी बनना पड़ता है। भगवान् की सहायता तो सबको मिलती रहती है, किन्तु भगवान खैरात, सदा व्रत, बिना तप परिश्रम के किसी को कुछ नहीं देते। आलसियों ने प्रार्थना गढ़ ली है।

'अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।' या
'तुलसी बिरवा बाग में, सींचे ते कुम्हलाय,
रहैं भरोसे राम के पर्वत पर हरियाय।'

ये सब आलसी, प्रमादी लोगों की उक्तियां हैं-परमेश्वर तो आदेश देते हैं-

'कुर्वन्नेवेहि कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' यजु. 40-2।

कर्म करते हुए ही सैकड़े वर्ष जीने की इच्छा करे। जो प्रयत्नपूर्वक चेष्टा करके परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं उन्हें परमश्वेर की सहायता

अवश्य मिलती है।

परमेश्वर की उपासना का फल होता है कि हमें परमेश्वर के गुणों कृपा, दया आदि का साक्षात् अनुभव होने लगता है।

उपासना का अर्थ होता है–

उप+आसना, उप समीप और आसना स्थित होना या बैठना। इस प्रकार उपासना का अर्थ हुआ समीप में स्थित होना या रहना। परमेश्वर शरीरधारी तो है नहीं कि उनके समीप बैठा जाये। परमेश्वर तो सर्वव्यापक, निराकार हैं। अतः परमेश्वर की उपासना का अर्थ हुआ कि हम अपने जीवन और चरित्र को परमेश्वर के गुणों के अनुकूल बनायें। हम मन से, मनन–चिन्तन से परमेश्वर की निकटता प्राप्त करें।

केवल गुण कीर्तन करते रहें और अपनी दीनता का, अनाथता का, रोना रोते रहें तो इससे कोई लाभ नहीं होता। इसलिए स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि भांड़ की तरह गुण कीर्तन करने से कोई लाभ नहीं है। परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए और अपनी प्रार्थना के अनुकूल आचरण भी करना चाहिए। अपने को दीन या शक्तिहीन समझकर प्रार्थना करना चाहिए, किन्तु प्रार्थना के अनुरूप प्रयास, परिश्रम अवश्य करना चाहिए।

हमने अध्याय का आरम्भ किया था कि हम परमेश्वर की वन्दना क्यों करें और प्रातः काल उठकर परमेश्वर की वन्दना करने से क्या लाभ है? हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि परमेश्वर की वन्दना अवश्य करनी चाहिए, उससे हमें बड़ी भारी सहायता मिलती है।

परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना का एक और बड़ा उत्तम परिणाम निकलता है। परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना करने वाले के मन में एक सहायता, सहयोग पाने का आश्वासन उगने लगता है और उसकी नकारात्मक विचारधारा समाप्त हो जाती है। सकारात्मक विचारधारा, सक्रियता पूर्ण आश्वस्त चिन्तन और क्रियाशीलता के भाव उगने लगते हैं। उसे प्रभु की कृपा का, सहायता का सकारात्मक आश्वासन मिलने लगता है। जिसके सहायक परमेश्वर हों, वह दूसरे की सहायता के लिए मोहताज नहीं होता। अतः प्रभु वन्दना का यह बड़ा भारी लाभ है। क्रियाशीलता में सफलता का आश्वासन मिलने लगता है। हमारे जीवन के चिन्तन में, क्रियाकलाप में सकारात्मकता आ जाती है।

सृष्टि का रचनाकार

❑ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

सृष्टि का रचनाकार कैसा है वह! कहां रहता है क्या करता है वेदों में उसका स्वरूप बताया है सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वव्यापक सर्व शक्तिमान सर्वान्तिर्यामी आदि गुणों वाला है। पौराणिक उसे अवतार लेने वाला व जन्म लेने वाला साकार वाला मानते है। उसकी विभिन्न आकार रूप वाली मूर्तियां बना उनमें प्राण प्रतिष्ठा करते मन्दिरों में पूजा करते हैं।

यदि ईश्वर साकार होता और मन्दिर में मूर्ति की भांति खड़ा रहता और जैसा कि पौराणिक मुँह में चने के दाने के बराबर भोजन या मिष्ठान लगा अपने आप पेट भर खाते हैं तो वह भगवान तो भूखा ही रह जाता फिर उसे क्रोध भी आता अनेक लोग पानी में दूध मिला कर महादेव पर चढ़ाते हैं। यह देख हो सकता है भगवान ऐसे भक्त को चांटा भी रसीद कर देता और कहता अपना दूध तो शुद्ध रखता है मेरे लिए पानी में एक चम्मच दूध मिला कर लाया है जो भाग जा यहां से।

और यदि भगवान (ईश्वर) चलता फिरता किसी के घर पहुँच जाता तो लोग दरवाजा भी बन्द कर लिया करते कहते रोजाना ही भोजन करने आ जाता है हाथ पैर है कमाकर नहीं खा सकता लोग बूढ़े, मा–बाप को नहीं खिला सकते उसे कैसे खिला सकते।

आकार वाला होता तो अनेक लोग उसकी चापलूसी करते किन्हीं से विरोध भी होता किन्हीं से अनवन भी होती और जातिवाद पक्षपात भी होता कोई उससे लड़ाई वाद–विवाद आरोप प्रत्यारोप भी लगते ऐसा भी तो हो सकता है कि कोई अन्य व्यक्ति ईश्वर को हटा कर कहता कि मैं ही ईश्वर समझो फिर असली नकली ईश्वर का झगड़ा होता आकार वाला होता तो उसकी आज की भांति हिन्दू मुसलमान ईसाई, पारसी जैन यहूदी आदि की भांति सम्प्रदाय भी होता और एक सम्प्रदाय में होता तो उसी सम्प्रदाय का पक्ष लिया करता।

बह्मणादि किसी वर्ण या जन्म से जाती में होता और फिर जातिवाद भेदभाव से अन्य जाति वाले घृणा करते उच्च मिटा के भेद से देखा जाता आकार वाला होता तो जन्म भी लेता मृत्यु भी होती गर्भ में भी रहता जहां भी जन्म लेता वहां माता–पिता भाई बहन भी होते परिवार बहुत बड़ा होता।

ईश्वर आकार वाला होता तो दुनियां का सबसे धनवान भी होता धनवानौ का ही प्रिय होता निर्धन तो कभी मिलने पास पहुँचती ही न पाता।

आकार वाला होता तो धनाढ्य लोग ईश्वर की चापलूसी करते उस आकार वाले को बहुत सारे महल वायुयान जलयान दे देते ईश्वर भी मौज में रहता फिर धनाड्यो की मनमानी को ही किया करता जिसको चाहता जो चाहता कर दिया करता क्योंकि मनुष्य या शेर चीता हाथी जो भी होता क्रोध भी आया करता क्रोध से ही सब कुछ उलट पुलट किया करता।

जीव जैसे ईर्ष्या द्वेष काम, क्रोध मद माया लोभ में लिप्त रहता है वह सब भी करता मनुष्य की भांति चलता फिरता कहीं अनेकों शिष्य लाखों करोड़ो में हुआ करते हो सकता है इन्द्रियां होने से विषयों से दूर न रहा जाता और हृदय चर गुरुओं की भांति जैसा कि अनेक आज कारागार में है ऐसा होता आकार वाला होता तो कर्मो का फल भी भोगना हानि लाभ सुख दु:ख सब जीवन में होते फिर वही सब कुछ होता जो मनुष्य के साथ होता है कर्मफल भोगने हेतु वार–वार जन्म मरज मैं पड़ा रहता।

फिर जीव से परमात्मा में अन्तर की क्यों होता फिर एक स्थान पर रह कर सृष्टि को कैसे चलाता कैसे पूरी पृथ्वी ब्राहमण के काम–काज का ध्यान रखता और सृष्टि को कैसे नियम में चला पाता सब कुछ उलट पुलट हो जाता, सब कुछ देखते हुए यही उचित है कि परमात्मा निराकार ही ठीक है सब कुछ उसके विशेष व विज्ञान से है मनुष्य अल्पज्ञानी भी तो है उसे उतना ज्ञान कभी नहीं हो सकता जो उस परमेश्वर को है वह निराकार होकर नियम में सृष्टि का जैसा चला रहा है आकार का होकर नहीं कर सकता था–

आज मनुष्य सम्प्रदायों में उलझ कर रह गया है मानव बनें और ईश्वर को जानें इसके लिए वेदों की ओर चलना होगा जहां मानव मात्र एक जाति है एक ईश्वर है जो सच्चिदानन्द स्वरूप है निराकार व सर्वशक्तिमान है सर्वेश्वर सर्वव्यापक है उसी की उपासना करनी चाहिए।

– चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा–203131, मो. 8979794715

मैं ईश्वर को जानता हूँ

❐ मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर है अथवा नहीं? ईश्वर की सत्ता अवश्य है। क्या आप उसे जानते हैं? हां, मैं ईश्वर को जानता हूं। ईश्वर कैसा है? ईश्वर संसार में सबसे महान है। वह अन्धकार से पूरी तरह मुक्त है अर्थात् वह अन्धकार से सर्वथा दूर है। वह आदित्य वर्ण अर्थात् सूर्य के समान प्रकाशमान ज्योतिस्वरूप, ज्ञानस्वरूप व आनन्दस्वरूप आदि असंख्य गुणों वाला है। मनुष्य तब तक मृत्यु से पार नहीं जा सकता जब तक की वह ईश्वर को जान न ले और प्राप्त न कर ले। मृत्यु से पार जाने का अर्थ है कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करना। मृत्यु पर विजय तब होती है जब मनुष्य मृत्यु से घबराये न और मुस्कराकर उसका स्वागत करे। ऐसा कब होता है जब कि मनुष्य ईश्वर, आत्मा और जन्म व मृत्यु के चक्र के यथार्थ रहस्य को जान लेता है। इन्हें जान लेने पर मनुष्य मृत्यु के पार चला जाता है। मृत्यु के पार क्या है? इसका उत्तर है कि मृत्यु के पार मोक्ष है। यह मोक्ष ऐसा है कि इसमें दु:ख का लेश मात्र भी नहीं है। मोक्षावस्था में मनुष्य का आत्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आनन्द का भोग करता है। उसकी सभी इच्छायें व अभिलाषायें पूर्ण हो जाती हैं। वह जन्म व मरण के दु:खरूपी चक्र से मुक्त हो जाता है। मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष होती है। इसके बाद मनुष्य पुन: मनुष्य योनि में जन्म लेता है और वेदाध्ययन सहित श्रेष्ठ कर्मो को करके पुन: जीवनोन्नति कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है व करता है।

हमने जो उपर्युक्त विचार लिखे हैं वह हमारे नहीं अपितु ईश्वर द्वारा यजुर्वेद के 31वें अध्याय के मन्त्र संख्या 18 में मनुष्यों को उपदेश करते हुए बताये गये हैं। वेद स्वत: प्रमाण होने से यह वेद वचन भी पूर्ण प्रामाणिक एवं मान्य है। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वज्ञ होने से निर्भ्रान्त है। वेद के सभी वचन इसी कारण प्रमाण माने जाते हैं कि वह सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ ईश्वर के कहे गये वचन हैं। तर्क व युक्ति से भी वेद में कही गई बातों की पुष्टि की जा सकती है। आईये, अब वेदमन्त्र पर भी एक ख्रष्टि डाल लेते हैं। वेदमन्त्र है:

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्ता्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय॥

इस मंत्र का ऋषि दयानन्द जी द्वारा किया गया पदार्थ एवं भावार्थ हम प्रस्तुत करते हैं। पदार्थ में वह लिखते हैं, "हे जिज्ञासु पुरुष! (अह्) मैं जिस (एत्) इस (महान्त्) बड़े-2 गुणों से युक्त (आदित्यवर्ण्) सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप (तमस:) अन्धकार वा अज्ञान से (परस्ता्) पृथक् वर्तमान (पुरुष्) स्वस्वरुप से सर्वत्र पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूं (त्), एव उसी को (विदित्वा) जान के आप (मृत्यु) दु:खदायी मरण को (अति, एति) उल्लंघन कर जाते हैं किन्तु (अन्य:) इस से भिन्न (पन्था:) मार्ग (अयनाय) अभीष्ट स्थान मोक्ष के लिए (न, विद्यते) नहीं विद्यमान है।

उपर्युक्त मंत्र का ऋषि कृत भावार्थ है 'यदि मनुष्य इस लोक परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सब से अति बड़े स्वयंप्रकाश और आनन्दस्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक् वर्तमान परमात्मा को जान के ही मरणादि अथाह दु:खसागर से पृथक् हो सकते हैं। यही सुखदायी मार्ग है। इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं है।'

उपर्युक्त मन्त्र के बाद के मंत्र में भी ईश्वर कैसा है, इसका उपदेश ईश्वर ने किया है। मन्त्र में बताया गया है कि 'जो यह सर्वरक्षक ईश्वर आप उत्पन्न न होता हुआ (अर्थात् जन्म न लेता हुआ) अपने सामर्थ्य से जगत् को उत्पन्न कर और उसमें प्रविष्ट होके सर्वत्र विचरता है, जिस अनेक प्रकार से प्रसिद्ध ईश्वर को विद्वान् लोग ही जानते हैं, उस जगत् के आधाररूप सर्वव्यापक परमात्मा को जान कर मनुष्यों को आनन्द को भोगना चाहिये।'

वेद के इन मंत्रों में ईश्वर के स्वरूप सहित ईश्वर को जानने से होने वाले लाभों को भी बताया गया है। ईश्वर को जानने से मनुष्य मृत्यु के पार होकर मोक्ष अर्थात् अक्षय आनन्द को प्राप्त करता है। यह मोक्ष का आनन्द जीवात्माओं वा मनुष्यों को बिना ईश्वर को जाने, बिना ईश्वर की उपासना किये व साथ ही वेदोक्त कर्म किये बिना प्राप्त नहीं होता। हम यह भी अनुमान करते हैं कि जो लोग वेदों का अध्ययन नहीं करते, वेदानुसार ईश्वरोपासना, देवयज्ञ व इतर महायज्ञों को नहीं करते और जिनके गुण, कर्म व स्वभाव वेदाज्ञा के अनुरूप न होकर विपरीत हैं, वह न तो ईश्वर को यथार्थरूप में जान सकते हैं और न ही मोक्षानन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

मनुष्य जीवन पर विचार करते है तो हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य शरीर में परमात्मा ने हमें पांच ज्ञान व पांच कर्मेन्द्रियां दी हैं। ज्ञानेन्द्रियों से ईश्वर व सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर कर्मेन्द्रियों के द्वारा हमें वेद विहित कर्मो को करना है। इससे हम ईश्वर सहित आत्मा और संसार का ज्ञान भी प्राप्त कर लेंगे और मृत्यु के पार भी जा सकते हैं तथा आनन्द का भोग भी दीर्घ काल तक कर सकते हैं। मनुष्य जीवन हमें मिला ही इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए है। ईश्वर व जीवात्मा दोनों चेतन पदार्थ हैं। ईश्वर आनन्दस्वरूप है और जीवात्मा आनन्द से रहित है। मनुष्य का जीवात्मा अविद्या व अज्ञान की अवस्था में भौतिक पदार्थो में सुख व आनन्द की खोज करते हुए उनके भोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ लेता है। वेद पढ़ने पर ज्ञात होता है कि ईश्वरोपासना एवं वैदिक कर्मो को करने से ही अक्षय सुख मिलता है। अत: सभी मनुष्यों को वेद की शरण को प्राप्त होकर ईश्वर को जानना चाहिये और जन्म व मरण के दु:खरूपी चक्र से छूट कर मोक्षानन्द का भोग करना चाहिये। इति

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन:09412985121

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल,
दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,
फोन : 01495-270503, मो. 09416747308

रसोई में स्वास्थ्य

❒ डॉ. पवन गोदारा

- नमक केवल सेन्धा प्रयोग करें। थायराइड, बी.पी., पेट ठीक होगा।
- कुकर स्टील का ही काम में लें। एल्युमिनियत में मिले लीड से होने वाले नुकसानों से बचेंगे।
- तेल कई भी रिफाइंड न खाकर, केवल तिल्ली, सरसों, मूंगफली, नारियल प्रयोग करें। रिफाइंड में बहुत केमिकल होते हैं।
- सोयाबीन बड़ी को 2 घण्टे भिगो कर, मसल कर जहरीली झाग निकाल कर ही प्रयोग करें।
- रसोई में एग्जास्ट फैन जरूरी हैं, प्रदूषित हवा बाहर करें।
- काम करते समय स्वयं को अच्छा लगने वाला संगीत चलाएं। खाने में अच्छा प्रभाव आएगा और थकान कम होगी।
- देसी गाय के घी का प्रयोग बढ़ाएं। अनेक रोग दूर होंगे, वजन नहीं बढ़ता।
- ज्यादा से ज्यादा मीठा नीम/कढ़ी पत्ता खाने की चीजों में डालें, सभी का स्वास्थ्य ठीक करेगा।
- ज्यादा चीजें लोहे की कढ़ाई में ही बनाएं। आयरन की कमी किसी को नहीं होगी।
- भोजन का समय निश्चित करें, पेट ठीक रहेगा। भोजन के बीच बात न करें, भोजन ज्यादा पोषण देगा।
- नाश्ते में अंकुरित अन्न शामिल करें।
- सुबह के खाने के साथ ताजा दही लें, पेट ठीक रहेगा।
- चीनी कम से कम प्रयोग करें, ज्यादा उम्र में हड्डियां ठीक रहेंगी। चीनी की जगह बिना मसाले का गुड़ या देशी शक्कर लें।
- छौंक में राई के साथ कलौंजी का भी प्रयोग करें, फायदे इतने कि लिख ही नहीं सकते।
- चाय के समय, आयुर्वेदिक पेय की आदत बनाएं व निरोगी रहेंगे।
- डस्टबिन एक रसोई में और एक बाहर रखें, सोने से पहले रसोई का कचरा बाहर के डस्टबिन में डालें।
- रसोई में घुसते ही नाक में घी या सरसों तेल लगाए, सिर और फेफड़े स्वस्थ रहेंगें।
- करेले, मैथी, मूली याने कड़वी सब्जियां भी खाएं, रक्त शुद्ध रहेगा।
- पानी मटके वाले से ज्यादा ठंडा न पिएं, पाचन व दांत ठीक रहेंगे।
- रसोई में घुसते ही थोड़े डॉई फ्रूट (काजू की जगह तरबूज के बीच) खायें, एनर्जी बनी रहेगी।
- प्लास्टिक, एल्युमिनियम रसोई से हटाये, कैंसर कारक हैं।
- माइक्रोवेव ओवन का प्रयोग कैंसर कारक है।
- खाने की ठंडी चीजें कम से कम खाएं, पेट और दांत को खराब करती हैं।
- बाहर का खाना बहुत हानिकारक है, खाने से सम्बन्धित ग्रुप से जुड़कर सब घर पर ही बनाएं।
- तली चीजें छोड़ें, वजन, पेट, एसिडिटी ठीक रहेगी।
- मैदा, बेसन, छोले, राजमा, उड़द कम खाएं, गैस की समस्या से बचेंगे।
- अदरक, अजवायन का प्रयोग बढ़ाएं, गैस और शरीर के दर्द कम होंगे।
- बिना कलौंजी वाला अचार हानिकारक होता है।
- पानी का फिल्टर आर.ओ. वाला हानिकारक है। यू.वी वाला ही प्रयोग करें, सस्ता भी और बढ़िया भी।
- रसोई में ही बहुत से कॉस्मेटिक्स हैं, इस प्रकार के ग्रुप से जानकारी लें।
- रात को आधा चम्मच त्रिफला एक कप पानी में डाल कर रखें, सुबह कपड़े से छान कर Eye Wash Cup में डाल कर आंखें धोएं, चश्मा उतर जाएगा। छान कर जो पाउडर बचे उसे फिर एक गिलास पानी में डाल कर रख दें। रात को पी जाएं। पेट साफ होगा, कोई रोग एक साल में नहीं रहेगा।
- सुबह रसोई में चप्पल न पहनें, शुद्धता भी, एक्यू प्रेशर भी।
- रात का भिगोया आधा चम्मच कच्चा जीरा सुबह खाली पेट चबा कर वही पानी पिएं, एसिडिटी खत्म।
- एक्यू प्रेशर वाले पिरामिड प्लेटफार्म पर खड़े होकर खाना बनाने की आदत बना लें तो भी सब बीमारी शरीर से निकल जायेगी।
- चौथाई चम्मच दालचीनी का कुल उपयोग दिन भर में किसी भी रूप में करने पर निरोगत अवश्य होगी।
- रसोई के मसालों से बना चाय मसाला स्वास्थ्यवर्धक है।
- सर्दियों में नाखून बराबर जावित्री चूसने से सर्दी के असर से बचाव होगा।
- सर्दी में बाहर जाते समय, 2 चुटकी अजवायन मुंह में रखकर निकलिए, सर्दी से नुकसान नहीं होगा।
- रस निकले नीबू के चौथाई टुकड़े में जरा सी हल्दी, फिटकरी रखकर दांत मलने से दांतो का कोई भी रोग नहीं रहेगा।
- कभी-कभी नमक व हल्दी में 2 बूंद सरसों का तेल डाल कर दांतों को उंगली से साफ करें, दांतों का कोई रोग टिक नहीं सकता।
- बुखार में 1 लीटर उबार कर 250 ग्राम कर लें, साधारण ताप पर आ जाने पर रोगी को थोड़ा दें, दवा का काम करेगा।
- सुबह के खाने के साथ घर का जमाया ताजा दही जरूर शामिल करें, प्रोबायोटिक है।
- सूरज डूबने के बाद दही या दही से बनी कोई चीज न खाएं, ज्यादा उम्र में दमा हो सकता है।
- दही बड़े सिर्फ मूंग की दाल के बनने चाहिए, उड़द के नुकसान करते हैं।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

આર્યસમાજ, આર્ય અને વૈદિક અધ્યાત્મ

મૂળ હિન્દીમાં લેખક:- મધુ વાર્ષ્ણેય, વૈનકુંવર કેનેડા (પરોપકારીના વર્ષ ૬૦, અંક ૬, માર્ચ દ્વિતીય) માંથી સાભાર

આર્યસમાજ એક વૈચારિક ક્રાંતિ, આંદોલન અને સુધારક બુદ્ધિવાદી ચિન્તનધારા છે. એના વૈચારિક ચિન્તન, માનયતાઓ, આદર્શ આદિ જીવન-જગતને સીધો, સાચો અને સરળ માર્ગ બતાવે છે. એની વિચારધારા જીવનની જટિલતાઓનું સમાધાન આપે છે. એની મહત્ત્વપૂર્ણ વિશેષતાઓ છે – વૈજ્ઞાનિકતા, પ્રામાણિકતા, આધુનિકતા, વ્યાવહારિક ઉપયોગિતા આદિ. આર્યસમાજનો આવિર્ભાવ દેશ, ધર્મ, જાતિની રક્ષા, વેદપ્રચાર, માનવ-ઉત્થાન, માનવ-નિર્માણ, વિચાર અને ચરિત્ર-નિર્માણ કરવાની સાથે સાથે ઢોંગ, પાખંડ, અજ્ઞાન આદિને દૂર કરવા માટે થયો છે. પ્રારંભની એની ભૂમિકા રહી છે – જાગતા રહો, જગાવતા રહો. આર્યસમાજ વેદવિરુદ્ધ માન્યતાઓ, મૂર્તિપૂજા, અવતારવાદ, મૃતક શ્રાદ્ધ, ગુરુડમ, વ્યક્તિ પૂજા, અવૈજ્ઞાનિક ધાર્મિક-કર્મકાંડ, અન્ધવિશ્વાસ, પૂજાપો, ચઢાવો આદિમાં વિશ્વાસ નથી રાખતો. જે સત્ય, વેદાનુકૂળ, વિજ્ઞાનસમ્મત પ્રામાણિક વાતો છે, એને મહત્ત્વ આપે છે. એટલે જ કહેવાયું છે – જ્યાં જ્યાં આર્યસમાજ છે, ત્યાં ત્યાં જીવન છે. પં. મદન મોહન માલવીયનું એમ કહેવું સત્ય છે કે – આર્યસમાજ હિન્દુત્વની રક્ષા માટેનો સહુથી મોટો ચોકીદાર છે. જો આર્ય જાગૃત, ગતિશીલ અને સંગઠીત રહેશે તો સંસ્કાર, સંસ્કૃતિ, જીવન-મૂલ્ય આદિ સુરક્ષિત રહેશે. આર્યસમાજ સર્વદા વેદવિરુદ્ધ વાતોનું ખંડન તથા સત્ય સિદ્ધાંતોનું મંડન કરતો આવ્યો છે. એટલા માટે જ અલ્પ સમયમાં જ આર્યસમાજે પ્રત્યેક ક્ષેત્રમાં જે ઉન્નતિ, નિર્માણ, સુધાર, પરિવર્તન આદિ કાર્યો કર્યા છે, એ સદાય સ્મરણીય, વન્દનીય અને પૂજનીય રહેશે. એ સત્ય આજે પણ નિર્વિવાદ છે કે આર્યસમાજ સર્વોત્તમ વિચારધારાનું સ્વામીત્ત્વ ધરાવે છે. એની પાસે મૌલિક વૈદિક વિચારશક્તિ તથા ક્રિયાન્વિત કરવાની શક્તિ ધરાવે છે. આજ વિચારધારા સંસારને નવી દૃષ્ટિ અને સૃષ્ટિ આપી શકે છે. આર્ય વિચાર-ધારાનો જેટલો પ્રચાર-પ્રસાર થશે, માનવસમાજ એટલો જ પાપ, અધર્મ, વિવાદો આદિમાંથી છૂટીને જીવનને સફળ તેમજ સાર્થક બનાવી શકશે.

આર્યસમાજ શક્તિશાળી સંગઠન છે, જે પ્રગતિના માર્ગે ચાલવાની પ્રેરણા આપે છે. ઋષિ દયાનન્દે પ્રાચીન વેદમતને ફરીથી જાગૃત કરીને આર્યસમાજનો પાયો નાખ્યો. એના બધા સિદ્ધાન્ત અને નિયમો વેદો પર આધારિત છે. આર્ય શબ્દનો અર્થ છે પૂર્ણ પુરુષ જેમાં બધા શ્રેષ્ઠ ગુણ હોય અને સમાજનો અર્થ છે સંગઠન અથવા સમુદાય. એટલે આર્યસમાજનો અર્થ થયો શ્રેષ્ઠ ગુણ-સમ્પન્ન વ્યક્તિઓનું સંગઠન જે પોતાના અને અન્યોના કલ્યાણ માટે કાર્ય કરે. આર્ય એક વ્યાપક શબ્દ છે. એ કોઈ વિશેષ સંગઠન, ટોળા, મત-સમ્પ્રદાય, કે જાતિનું નામ નથી. આ શબ્દનો પ્રયોગ એ પ્રત્યેક વ્યક્તિઓ માટે થાય છે જે શુભ ગુણ સમ્પન્ન હોય, પછી એ ગમે તે દેશમાં, ક્યાંય પણ જન્મ્યો હોય. આર્યસમાજનું એક કાર્ય એ પણ છે કે મનુષ્ય મનુષ્ય વચ્ચે જે બનાવટી સમ્બન્ધ છે, મતભેદ પેદા થયા છે અને જેનો પાયો સંકુચિત વિચારધારા પર ટકેલો છે, એને દૂર કરીને મનુષ્ય મનુષ્યને પરસ્પર સંગઠિત કરવા. દ્વેષ, ઈર્ષ્યા અને જાતીય વિવાદોને દૂર કરીને સંસારમાં એકરૂપતા અને શાંતિની સ્થાપનાા કરવી.

આર્યસમાજનો વિશ્વાસ છે કે ઈશ્વર કહો કે પરમેશ્વર – એક જ છે. એજ સૃષ્ટિનો રચયિતા અને પાલક છે. દરેક દેશ અને રાષ્ટ્રના ભગવાન જુદા જુદા નથી. જુદા જુદા દેશો અને ભાષાઓમાં ઈશ્વરને જુદા જુદા નામોથી યાદ કરવામાં આવે છે પરંતુ નામોની ભિન્નતાને કારણે ઈશ્વર સાથેના સમ્બન્ધોમાં વિભિન્નતા પેદા નથી થતી. બધાં જ દેશોમાં એજ સૂર્ય, એજ ચંદ્ર, એજ હવા, એજ પાણી, એજ ધરતી-આકાશ અને એજ માનવીય ભાવનાઓ, વિચારો અને કાર્યો છે. સંસાર પરમાત્માને માને છે, પણ એના સત્ય સ્વરૂપને જાણતો નથી. આર્યસમાજનો સન્દેશ છે કે પહેલા પરમાત્માના સ્વરૂપ, કાર્યો, નિયમો આદિને જાણો, પછી એની પૂજા-ભક્તિ-પ્રાર્થના -ઉપાસના આદિ કરો. પરમેશ્વર કણ-કણ અને ક્ષણ-ક્ષણમાં સર્વત્ર વિદ્યમાન છે. એ વ્યક્તિ નહીં શક્તિ છે, અજન્મા છે. જન્મ-મરણના બન્ધનથી મુક્ત છે. એની કોઈ મૂર્તિ ન બની શકે, એને કોઈએ જોયો નથી, ગુણ-કર્મ-સ્વભાવથી એના અનેક નામ છે, એનું નિજ નામ ઓ૩મ્ છે, એ સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ છે.

ઈશ્વર ક્યારેય શરીર ધારણ કરીને અવતાર નથી લેતા. એટલે જ તો ઈશ્વર અને જીવ – બંને એક નથી. સર્વવ્યાપક પરમેશ્વરની કોઈ આકૃતિ ન બની શકે. ઈશ્વરના સ્થાને કલ્પિત દેવી – દેવતાઓ અને મહાપુરુષોની મૂર્તિઓની પૂજા વેદ વિરુદ્ધ તથા અવૈજ્ઞાનિક છે. મૂર્તિઓમાં પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા કરવી, એને જમાડવું-પીવડાવવું, હિંચકે બેસાડવું, સૂવડાવવું–જગાડવું, ધૂપ–દીપ બતાવવા, ભોગ ધરાવવા આદિ અંધશ્રદ્ધા અને અજ્ઞાન છે. ઈશ્વર સર્વત્ર વ્યાપક અને સદાય આપણી સાથે છે, એજ નિજ પરમાત્માની પૂજા-ભક્તિ, ઉપાસના, આજ્ઞાનું પાલન કરવું – આ બધાથી આપણે દૂર જઈ રહ્યા છીએ.

જોવામાં આવી રહ્યું છે કે લોકો અનેક દેવી-દેવતાઓ, મહંતો, ગુરુઓની ચરણ-વન્દના, સ્તુતિ, ગુણગાન, પૂજા-પાઠ આદિ કરી રહ્યા છે. આ પૂજા-પાઠ નહીં પણ પરમાત્માના નામે પ્રદર્શન-વ્યાપાર ચાલી રહ્યા છે. આર્યસમાજનું ચિંતન ઈશ્વરનું સરળ, સત્ય સ્વરૂપ તથા એની પ્રાપ્તિનો સરળ માર્ગ બતાવે છે. પરમાત્મા તો પ્રત્યેક સ્થળે સમયે ઉપલબ્ધ છે. એજ ઉપાસના કરવા યોગ્ય છે. મહાપુરુષોના ચરિત્રનું અનુકરણ કરો, સમ્માન કરો. એમના વિશેષ ગુણોને જીવનમાં ધારણ કરો – આજ એમની સાચી પૂજા છે. ચરણ-વન્દના ન કરતા કર્મ વન્દના કરો. કર્મોને સુધારવાથી, દુર્ગુણો અને દોષોનો ત્યાગ કરવાથી, પરમેશ્વરના બતાવેલા વૈદિક માર્ગે ચાલવાથી જીવન બદલાઈ જાય છે. શ્રેષ્ઠ બુદ્ધિને જાગૃત રાખવાથી મનુષ્ય પાપ-અધર્મ અને દુર્ગુણોથી દૂર રહે છે, આજ અસલ ભગવતી અર્થાત બુદ્ધિનું જાગરણ છે.

માતા-પિતા, અતિથિ, પશુ-પક્ષી આદિ પ્રત્યે સદ્ભાવના રાખીને જીવનને નિર્મળ બનાવવું જ આર્યોનો પરમધર્મ છે. આવી વ્યક્તિ ઉત્તમ સુખાદિ આચરણો વાળી હોવાથી આર્ય બની જાય છે. આર્ય કોઈ જાતિ વિશેષ નથી. આર્યસમાજ કુરીતિઓની વિરુદ્ધ નિરન્તર સંઘર્ષશીલ રહ્યો છે. આજ કારણે આર્યસમાજ સદાય પોતાના મહાસમ્મેલનોમાં કુરીતિઓ, અંધશ્રદ્ધા અને પાખંડની વિરુદ્ધમાં અવાજ ઉપાડતો રહ્યો છે, જેથી માનવ-સમાજમાં જાગૃતિ આવે, સભ્ય સમાજની સ્થાપના થાય.

આર્યસમાજની માનયતાઓનો મૂળાધાર વેદ છે. મહર્ષિ દયાનન્દે વેદજ્ઞાનને ફરીથી ઈશ્વરીય જ્ઞાનના પદે પ્રતિષ્ઠિત કર્યું.

એમણે ઘોષણા કરી છે – વેદ સહુકોઈ માટે છે એને ભણવાનો સહુને સમાન અધિકાર છે. ઋષિ દયાનન્દની પ્રતિભાનો ચમત્કાર જ છે કે એમણે વેદોના ઉપદેશ અને શિક્ષાને જીવનના જગત સાથે જોડ્યા. એમનો નારો હતો – "વેદ તરફ પાછા વળો, વેદોને માનો". વેદ-જ્ઞાન જીવન જીવતા સીખવાડે છે. વેદોમાં પ્રભુની રચના-નિયમ, વ્યવસ્થા, વિધિ-નિષેધનો ઉપદેશ તથા સન્દેશ છે. વેદ-પ્રચારથી જ અજ્ઞાન, અવિદ્યા, પાપ, અધર્મ, ઢોંગ, પાખંડ, ગુરુડમ આદિ દૂર થાશે. આધ્યાત્મિક ચેતના જાગૃત થશે. અધ્યાત્મ માર્ગનું અનુસરણ કરવાથી મન અને આત્મામાં શાન્તિ અને સ્થિરતા આવશે. સંસારનો ઉપકાર કરવો અર્થાત શારીરિક, આત્મિક અને સામાજીક ઉન્નતિ કરવી આ સમાજનો મુખ્ય ઉદ્દેશ્ય છે. વેદ-જ્ઞાનના નામ પર બધાં જ એકમત છે.

દાર્શનિક ક્ષેત્રમાં મહર્ષિ દયાનન્દે ત્રૈતવાદની સ્થાપના કરી, દાર્શનિક જગતમાં એમનું આ મહત્ત્વપૂર્ણ યોગદાન છે. ઋષિના મતે ઈશ્વર, જીવ અને પ્રકૃતિના કોઈ આદિ નથી તો એમનો અંત તો હોઈ જ ન શકે. એટલે આ ત્રણે અનંત છે.

સૃષ્ટિના રચયિતા પરમાત્મા છે, એના સિવાય આ સંસાર ન તો બની શકે છે કે ન ચાલી શકે છે. જગતમાં અનેકાનેક યોનિઓ પોત-પોતાના કરેલા કર્મોના ભોગોને ભોગવી રહી છે, જે જેવા કર્મ કરે છે, એવા જ ફળ એને મળે છે. જીવ કર્મ કરવામાં સ્વતંત્ર છે અને ફળ ભોગવવામાં પરતંત્ર છે. જીવના શરીરમાં આવવાને જન્મ અને શરીરને છોડવાને મૃત્યુ કહે છે. આવવા-જવાના એ ક્રમને આવાગમન કહે છે. જીવનું કર્માનુસાર શરીર બદલાયા કરે છે. જીવને મનુષ્ય- જન્મ અગણિત પુણ્યકર્મો અને સૌભાગ્યથી મળે છે. બધી જ યોનિઓમાં સહુથી શ્રેષ્ઠ, ઉચ્ચ, બુદ્ધિમાન માનવને જ માનવામાં આવ્યો છે. આવાગમનના આ સિદ્ધાન્તથી જીવને નિરન્તર ઉન્નતિ, પુરુષાર્થ અને સુધરવાનો અવસર મળ્યા કરે છે. જો માનવ-જન્મ મળ્યા પછી પણ સત્સંગ, પ્રભુભક્તિ આદિ ઉત્તમ કાર્ય કરવામાં ન આવે તો એનાથી મોટું નુકસાન બીજું કોઈ ન હોઈ શકે. શ્રેષ્ઠ કર્મોથી મનુષ્ય દેવત્ત્વને પ્રાપ્ત થાય છે.

આજે ધર્મના નામે અનેક પંથ, સમ્પ્રદાય, મત આદિ ચાલી નિકળ્યા છે – દિવસેને દિવસે વધી રહ્યા છે, જેના કારણે સત્યધર્મ દૂર થઈ ગયો છે. ધર્મ પરમાત્મા દ્વારા પ્રવર્તિત થાય છે, જ્યારે કે સમ્પ્રદાય મનુષ્ય દ્વારા સ્થપાય છે. ધર્મ સદાય રહે છે, જ્યારે સમ્પ્રદાય ઘટતા-વધતા રહે છે. ધર્મ જોડે છે, સમ્પ્રદાય પરસ્પર ઝગડા, વિવાદ આદી કરાવીને તોડે છે. જ્ઞાન અને વિવેક ઘણા પાછળ રહી જાય છે. આર્યસમાજનો સન્દેશ અને વેદોનો નારો છે "ધર્મને ઓળખો, પકડો તથા એના પર આચરણ કરો". આચરણથી જ જીવન સુધરશે, પવિત્ર બનશે. વૈદિક ધર્મ માનવ માત્રને ભેદભાવ વિના એકસમાન દૃષ્ટિથી જુએ છે. સહુના કલ્યાણ, ઉત્થાન અને સુમંગળની કામના કરે છે.

જીવનને સંતુલિત, વ્યવસ્થિત, નિયમિત તથા આત્મોન્નતિની દિશામાં લઈ જવા માટે ઋષિઓએ આશ્રમ વ્યવસ્થા બનાવી છે. વ્યક્તિગત ઉન્નતિ માટે બ્રહ્મચર્ય, ગૃહસ્થ, વાનપ્રસ્થ અને સંન્યાસ આશ્રમ ઉપયોગી છે.

આર્યસમાજનો સન્દેશ છે વર્ણ – વ્યવસ્થાજન્મથી નહીં, કર્મથી હોવી જોઈએ. જાતિ જન્મથી હોય છે પણ વર્ણ તો કર્મથી જ બને છે. આર્યસમાજ સંસ્કારોના સત્યસ્વરૂપનો રક્ષક, પ્રચારક અને પ્રસારક છે. સંસ્કારોથી જ સંસ્કૃતિ સુરક્ષિત રહે છે.

પરમાત્માનું એક નામ યજ્ઞ છે – સૃષ્ટિમાં એનો અખંડ યજ્ઞ ચાલી રહ્યો છે. આ સૂર્ય, ચન્દ્ર, પૃથ્વી, વાયુ – વનસ્પતિ-પશુ-પક્ષી બધાં જ યજ્ઞ કરી રહ્યા છે. યજ્ઞપ્રભુ મિલનનો માર્ગ પ્રશસ્ત કરી રહ્યા છે. યજ્ઞનો સંબંધ જન્મથી લઈને મૃત્યુ સુધીનો છે. એ વૈદિક ધર્મની ઓળખાણ છે.

આર્યસમાજના સિદ્ધાન્તાનુસાર સ્વર્ગ અને નરક કોઈ સ્થાન વિશેષ નથી, જ્યાં સુખ અને શાંતિ, સન્તોષ, પ્રેમ, બધા મળીને રહે છે, એજ સ્વર્ગ છે. જ્યાં દુ:ખ, કલેશ, ફૂટ, રોગ, ચિન્તા આદિ છે, એજ નરક છે. સ્વર્ગ અને નરક આજ શરીરમાં અને આજ સંસારમાં ભોગવવમાં આવે છે. કર્મોને સંભાળો, સુધારો અને ઊંચે લઈ જાઓ તો સ્વર્ગ આપણી પાસે આજ સંસારમાં છે.

ઋષિ દયાનન્દ અને આર્યસમાજે નારી જાતિના સમ્માન, મહત્ત્વ અને યોગદાનન માટે ખૂબ જ કાર્ય કર્યા છે. ગૃહસ્થનો સહુથી મોટો ધર્મ સન્તાનને સુસંકારિત તથા સુવિચારીત બનાવવાનો છે. નારીનું ધાર્મિક, શિક્ષિત અને સુસંકારિત હોવું અત્યાવશ્યક છે તોજ માનવ-નિર્માણ સંભવ છે.

આર્યસમાજમાં જીવિત શ્રાદ્ધનું વિધાન છે, મૃતકનું નહીં.

વૈદિકધર્મ અભક્ષ્ય ખાદ્ય પદાર્થોનો સપ્રમાણ વિરોધ તથા નિષેધ કરે છે. ભોજનના સૂક્ષ્મ ભાગમાંથી મન બને છે. જેવું અન્ન તેવું મન. મનના બગડવાથી વિચાર - ભાવ બદલાઈ જાય છે. જેવા વિચાર બનશે તદાનુસાર જ આચરણ થશે. આર્યસમાજના સિદ્ધાંત, આદર્શ અને માન્યતાઓ જીવ હિંસા તથા અભક્ષ્ય પદાર્થોનો વિરોધ કરે છે. આર્યસમાજ જ એક આવી સંસ્થા છે, જે મિથ્યા, મનગઢન્ત, અવૈજ્ઞાનિક, અન્ધવિશ્વાસ પૂર્ણ વાતોનું ખંડન કરવા માટે સાર્વજનિક રૂપે તર્ક-પ્રમાણ-યુક્ત શાસ્ત્રાર્થ કરવા માટે સદાય તૈયાર રહે છે. આજ કારણે બધી જ વિચારધારાના લોકો અન્દરોન્દર આર્યસમાજથી ડરે છે, કારણ કે આર્યસમાજ પાસે સત્ય પર આધારિત ચિન્તનની સમ્પદા છે. એની સામે તર્ક-પ્રમાણ વગરની વાતો ચાલી સકતી નથી. આર્યસમાજ અસત્ય વાતોના ખંડન અને સત્ય પ્રામાણિક વાતોના પ્રચાર પ્રસાર માટે સર્વદા ઉદ્યત રહે છે. એની ચિન્તનધારા સત્ય, વિજ્ઞાન, વેદ, તર્ક, પ્રમાણ, યુક્તિ, વ્યાવહારિક આધાર આદિ પર ચિન્તન-મનન કરવાની શક્તિ આપે છે. એ માનવતાનો પ્રચાર કરનારું, સત્યનું પ્રચારક અને ઈશ્વરીય જ્ઞાન વેદની માન્યતાઓ પર આધારિત સંગઠન છે. એટલે જ જાતિ, વર્ગ, અને ભૌગોલિક સીમાઓમાં બંધાયેલું નથી. એની માન્યતાઓનો આધાર વેદ છે. એ ઇચ્છે છે કે સંસારમાં વેદ-જ્ઞાનનો ફેલાવો થાય સુખ-શાન્તિ, ભાઈ-ચારાનું વાતાવરણ પુન: સ્થાપિત થઈ જાય.

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा) एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-ब्रह्मचारी शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन 15 जून 2018 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लेवें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।) प्रवेश से पूर्व परीक्षा ली जायेगी। उत्तीर्ण ब्रह्मचारी ही प्रवेश के योग्य माने जायेंगे। कम्प्यूटर शिक्षा का भी प्रबन्ध।

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित पाठयक्रम के अनुसार दसवी कक्षा तक साइंस और गणित पढ़ाने में योग्यता प्राप्त हो। ❑ शास्त्री वर्ग के छात्रों को काशिका, नामिक, अष्टाध्यायी आदि पढ़ा सके। अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण, चित्र एवम् आधार कार्ड सहित आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

डीएवी के बच्चों ने पूरे विश्व में मचाई धूम

डीएवी शताब्दी पब्लिक स्कूल जींद के बच्चे अपनी मेहनत व लगन से अपनी पहचान बनाने के लिए माहिर हैं। चाहे कोई भी क्षेत्र क्यों ना हो उन्होंने अपना परचम लहराया है। इसी कड़ी में डीएवी के विद्यार्थियों ने ऑल स्टार के द्वारा विश्व स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की और 1 मिनट का तलवारबाजी का वीडियो अपलोड कर पूरे विश्व में तलवारबाजी की डेढ़ लाख रूपये की स्पॉन्सरशिप हासिल कर यह दिखा दिया की दुनिया में एक जीन शहर भी एक ऐसा स्थान है जहां के डीएवी के बच्चे बड़ी से बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं यह उद्‌गार डीएवी संस्थाओं के क्षेत्रीय निदेशक डॉ धर्मदेव विद्यार्थी जी ने इस उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त करने पर बच्चों को प्रार्थना सभा में संबोधित करते हुए कहे डॉक्टर विद्यार्थी ने कहा कि पूरे विश्व में जितनी भी वीडियो अपलोड की गई उनमें से जो भी उत्तम से उत्तम वीडियो थी उनमें से डीएवी स्कूल जींद के बच्चों को यह स्पॉन्सरशिप दी गई। डॉक्टर विद्यार्थी का कहना है कि इस प्रतियोगिता में जजों द्वारा यह वीडियो पूरे विश्व से चयनित की गई जो अपने आप में एक इतिहास की बात है। इस उत्कृष्ट उपलब्धि पर स्कूल के विद्यार्थियों को डेढ़ लाख रुपए तक का तलवारबाजी का सामान ऑल स्टार के द्वारा भेजा गया जिससे स्कूल के बच्चों का हौसला बुलंद है इस उपलब्धि का श्रेय डॉक्टर विद्यार्थी जी ने तलवारबाजी की ट्रेनिंग देने वाली मैडम वीना सैनी और बच्चों के निरंतर प्रयास और कड़ी मेहनत को दिया। इस उपलब्धि पर डॉक्टर विद्यार्थी जी ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनको सम्मानित किया। इस दिन विद्यालय में शहीदी दिवस के उपलक्ष में बच्चों ने कविताओं में भाषण के माध्यम से शहीदों को याद किया वह नमन करते हुए उनके प्रति भावना व्यक्त की।

डॉ विद्यार्थी जी ने शहीदी दिवस के उपलक्ष पर बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि जिस देश के बालक यस्त्रियां और युवक अपने समस्त सुखों को त्याग कर अपने देश की बलिवेदी पर चढ़ गए उनके प्रति हमें अपनी सच्ची श्रद्धांजलि देने की परम आवश्यकता है। आज निस्वार्थ देशभक्तों की कमी है आज के दिन हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम सच्चे देशभक्त बने यदि हम सच्चे एवं पवित्र हृदय से देश सेवा के कार्यों में लग जाएं तो निसंदेह हमारा भारत वर्ष संसार में अपना गरिमापूर्ण स्थान बना सकता है डॉक्टर विद्यार्थी जी ने बच्चों व अध्यापकों सहित छोटी सी उम्र में शहीद हुए उन शहीदों के प्रति मौन धारण कर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 74वाँ वार्षिकोत्सव एवम् पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली)। वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'वैदिक पुस्तक मेला' विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। वर वधू चयन सेवा का परिचय मिलन सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक युवक युवतियों ने भाग लिया। आर्य पुरोहित सभा मुम्बई द्वारा वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीयता विषय पर कवि सम्मेलन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। जिसकी सभी ने खूब सराहना की। लगभग आठ कवियों ने सुन्दर काव्य पाठ किया तत्पश्चात आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय एवं आचार्य सत्यजीत जी के सारगर्भित प्रवचन हुए। ''आर्य महिला सम्मेलन' श्रीमती विद्योत्मा बांगिया (नेरूल) की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती विरमी देवी अग्रवाल (वाशी), श्रीमती उर्मिल बहल (अन्धेरी), श्रीमती नंदिनी आर्य (वडाला), श्रीमती विशुद्धा आर्या (काकडवाडी) उपस्थित थी। इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री (संयोजिका आर्य महिला समाज सान्ताक्रुजा) ने किया। ❑❑❑

आर्य समाज सैक्टर-27 चंडीगढ़ का वार्षिक उत्सव नव संवत्सर पर धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर चंडीगढ़, पंचकूला व मोहाली की विभिन्न आर्य समाजों से पधार कर तथा आसपास से आए सैंकड़ों लोगों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। यज्ञ पश्चात् दोनों दिन पंजाब के फिरोजपुर से आए श्री विजय आनंद जी ने अपने भजनों व उपदेश से खूब समां बांधा। नव संवत्सर पर यज्ञ पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के संस्कृत विभाग डॉक्टर विक्रम विवेकी जी, तथा आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती मधुराका जी ने आर्य समाज परिसर में धवजारोहण किया। कार्यक्रम में धर्म प्रेमी सज्जनों ने डॉ. विक्रम विवेकी जी के ओजस्वी भाषण का लाभ भी उठाया। कार्यक्रम के अंत में प्रधाना श्रीमती मधुराका ने विद्वानों, सभी समाजों से आए पदाधिकारियों व सदस्यों, तथा आगंतुकों का धन्यवाद् किया।

द्विवार्षिक चुनाव एवम् सड़क नामकरण

आर्य समाज मयुर विहार-II, दिल्ली जिस मार्ग पर स्थित है वह मार्ग लगभग दो किलोमीटर का है। वर्षो के प्रयास के बाद इस सड़क का नाम ''आर्य समाज मार्ग'' कर दिया गया है जिसका विधिवत् उद्घाटन पूर्व दिल्ली नगर निगम की मेयर श्रीमती निमा भगत एवम् भाजपा के उपाध्यक्ष श्री श्याम जाजू के कर कमलों से विधिवत हुआ। द्विवार्षिक चुनाव में **प्रधान**-श्री हरवंस लाल शर्मा, **मन्त्री**-श्री ओम प्रकाश पाण्डे, **कोषाध्यक्ष**-श्री लक्ष्मी चन्द गुप्ता निर्वाचित हुए।

नव संवत्सर-आयोजित

नव संवत्सर 2075 वि. के प्रथम दिवस पर **उपनगर नींदड़ आर्य समाज** में 21 कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

चुनाव समाचार

आर्यसमाज बड़ाबाजार (कोलकाता)

प्रधान- श्री दीनदयाल जी गुप्ता **मन्त्री**- श्री आनन्द देव आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री सज्जन बिन्दल

रोग निदान शिविर सम्पन्न

23वां रोग निदान शिविर **आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजीलाल आर्यकन्या छात्रावास समिति** के तत्वावधान में हरीश हॉस्पिटल के सौजन्य से वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित हुआ। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ एस.के. गुप्ता, डॉ. प्रमोद शर्मा, डॉ. सतीश माथुर, राज शेखर रेड्डी, डॉ. मनोज खण्डेलवाल, डॉ. सचिन झंवर, डॉ. हरीश गुप्ता, डॉ. प्राची गुप्ता डॉ. लवेश गुप्ता आदि पधारे हैं।

डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी का सम्मान

लातूर (महाराष्ट्र) आर्यजगत् तथा हिन्दी, मराठी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे और पत्नी सौ. संध्या लोखंडे का आर्य समान काकडवाडी में को सपत्नीक सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में मेघालय के राज्यपाल श्री गंगाराम की उपस्थित थे। डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने आर्य समाज और उसके माध्यम से अनेकों राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्य किये हैं। उन्होंने महाराष्ट्र कर्नाटक और आन्ध्र में लगभग 500 ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया है। लेखन के द्वारा समाज का प्रबोधन करते हुए उन्होंने अबतक 21 पुस्तकें लिखी है। इन्हीं कार्यो को दृष्टि में रखते हुए उन्हें आर्य समाज मुम्बई द्वारा ''आर्य वैदिक विद्वद् सम्मान'' प्रदान कर गौरवान्वित किया गया। इस कार्यक्रम में मुबई आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य प्रधान श्री मिठाईलालसिंह अध्यक्ष के रूप में विद्यमान थे। डॉ. लोखण्डेजी के साथ आर्य प्र.नि. सभा के महामन्त्री श्री अरूण अब्रोलजी तथा आचार्य बृहस्पति जी उड़ीसा का भी सम्मान किया गया।

बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि

जयपुर मानसरोवर के विजय पथ स्थित **वैदिक महिला मण्डल आर्य समाज** में क्रान्ति के महानायकों-भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव के बलिदान दिवस पर यज्ञ एवं श्रद्धांजलि अर्पित करके याद किया गया। इस अवसर पर **आर्यसमाज समन्वय समिति, महिला आर्य समाज मानसरोवर**, वैदिक सत्संग मण्डल तथा आर्य समाज जयपुर-दक्षिण के सदस्य व अधिकारीगण भी उपस्थित थे। वैदिक महिला मण्डल की संयोजक डॉ. सुमित्रा आर्या ने स्वाधीनता आन्दोलन में युवा क्रान्तिकारियों की भूमिका पर प्रकाश डाला तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज) के अध्यक्षता तथा मुख्य अतिथि यशपाल यश ने महानायकों, भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के अदम्य साहस व शौर्य को ओजस्वी स्वर सपरि भाषित किया। सैनी नर्सिंग कॉलेज के छात्रों ने भी ओजस्वी विचार प्रकट किए। ❑❑❑

18 मार्च **आर्य समाज सांभर** बैंक के तत्वावधान में चैत्र शु. प्रतिपदा 2015 वि. पर 27 कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सान्निध्य एवं संरक्षण स्वामी सोयानन्द सरस्वती का रहा। यज्ञ का संचालन पुरोहित द्रय प. रविदत्त मेद्यार्थी तथा दीपक शास्त्री के निदेशन में हुआ। यज्ञ के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश रहे। अन्य विशिष्ट उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुधीर शर्मा व देवेन्द्र शास्त्री की रही।

इस विराट् आयोजन की व्यवस्था श्री गिरधर गोपाल, कयाल के नेतृत्व में सर्वश्री नितेश गोयल अतुल अग्रवाल, ज्ञान प्रकाश, संजय तोपनीवाल एवम् राहुल अग्रवाल की टीम के हाथों रही।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम-जन्म दिवस

मानसरोवर जयपुर के ओमानन्दम परिसर में **आर्य समाज जयपुर-दक्षिण** के तत्वावधान में यज्ञ एवं प्रवचन श्री रामजन्म दिवस आयोजित हुए। यज्ञोपरान्त श्रीराम के पावन चरित्र पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता यश, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष ने श्री राम की पितृ तथा गुरु भक्ति, यम-नियमों की पालना, दृढ़ता, शील, संयम तथा धर्म के मूलाधार कर्त्तव्यों की पालना को चारित्रिक विशेषता बताया जिनके आधार पर महाबली रावण को परास्त किया। सर्वश्री श्याम अग्रवाल, राम नरेश जावर ओम प्रकाश गुप्ता व सुराना राम ने भी अपने विचार रखे। शांति पाठ के साथ समारोह विसर्जित हुआ।

भ्रातृत्व भाव कैसे बढ़े?

❑ भाई-भाई आपस में गलत फहमी अर्थात् संशय (संदेह) से बचें। ❑ अर्थ को लेकर जीवन में विवाद न करें। ❑ जो छोड़ सकता है, वह मालिक है। ❑ एक-दूसरे के सम्मान की सुरक्षा करना सीखें। ❑ भ्रातृत्व को कायम रखना हो तो प्रतिक्रिया न करें।

शोक संदेश

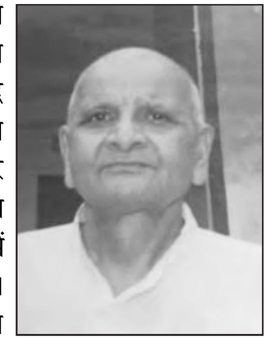

सभी को ज्ञात हो कि मेरे पूज्य पिता जी **श्री देवराज आर्य मित्र**, जो सेना में देश की सेवा करने के बाद वैदिक धर्म के प्रसार कार्य में सतत संलग्न रहे, ने 30 मार्च 2018 शनिवार 10.06 रात्रि को अन्तिम सांस ली। मुझे उनका पुत्र होने पर इतना गर्व है कि मैं अगले जन्म में भी उनका पुत्र होना चाहूंगा।

मेरे आदरणीय पिता जी सदैव समाज में लोगों को स्वास्थ्य, स्वच्छता व मानव समानता के लिए अपने भाषणों, लेखों व पुस्तकों के माध्यम से प्रेरित करते रहे। मैं भी अपना जीवन समाज में अपनी वैदिक संस्कृति के पुनः प्रसार व धारणाओं के लिए नवीनीकरण में लगाना प्रारम्भ कर चुका हूँ। आपके स्नेह व आशीर्वाद के लिए धन्यवाद।

- राकेश आर्य

(पृष्ठ 01 का शेष)

आदि जीवनदायी तत्त्वों की आपूर्ति बंद करनी होगी। ऐसा नहीं हो सकता कि हम वे तत्त्व पौधे को देते रहें और वह नहीं बढ़े। इसलिए दुष्कर्म जैसी प्रवृत्तियों पर रोकथाम के लिए अश्लीलता आदि की प्रवृत्तियों पर रोक लगाई जानी चाहिए जो कि उनके बढ़ने में सहायता करती है।

4. त्वरित न्याय-व्यवस्था हो-आज भारत जैसे देश की न्याय-प्रणाली में कई छेद हैं, जिनमें से एक है न्याय का देर से मिलना। कई अपराधों को या तो इसलिए छिपा दिया जाता है कि कौन पुलिस के चक्कर में पड़े? या कौन न्यायालयों के लम्बे चक्कर-काटे? या कौन अमुक दबंग व्यक्ति से पंगा ले? फिर भी कोई साहस कर न्यायलयों में प्रार्थना करे तो उसे न्याय पाने के लिए एक लम्बी-चौड़ी प्रक्रिया से निकलना पड़ता है, जो अपराधी को इस बात का पर्याप्त समय व अवकाश देती है कि वह प्रमाणों के साथ छेड़खानी करे, साक्षियों को डरा-धमकाकर उनके वचन बदलवाए। ऐसे कई विषयों में तो न्याय हो ही नहीं पाता और कहीं कभी किसी को धक्के खाकर न्याय मिलता भी है तो जीवन का अधिकतर भाग व्यतीत होने के बाद वह न मिलने के समान है। इसलिए भ्रष्टाचार से रहित कठोर नियम व्यवस्था व त्वरित न्याय-व्यवस्था आज की महती आवश्यकता है, जिसमें पीड़ित निर्भीक होकर अपनी पीड़ा उठा सके व शीघ्र न्याय पा सके।

निष्कर्ष- उपर्युक्त वेद-सम्मत उपायों को यदि अपनाया जाए तो निश्चित रूप से ऐसे कुकृत्यों पर पर्याप्त सीमा तक प्रतिबन्ध लग सकता है। लेकिन इसमें सबसे बड़ी बाधा है, समाज में वैसे विचारों का अभाव, वैसी इच्छाशक्ति का अभाव। इस अभाव का कारण है ऐसी शिक्षा का अभाव जो मानव को मानव बनाने पर जोर दे। पूर्ण सत्य तो यह है कि जब तक देश में मानव-निर्माण करने वाली शिक्षा नहीं होती तब तक देश की सभी समस्याएँ जैसे की तैसी बनी रहेंगी क्योंकि आग में घी डाले जाते हुए उसे भड़कने से कोई रोक नहीं सकता।

-म.न. 310, डिफेन्स कॉलोनी, हिसार

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष **1000/-** रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

वैदिक धर्म अपना अपनाओ और मनुष्य बनो

❒ पं. उम्मेद सिंह विशारद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित संस्कार विधि जो युग निर्माण में महत्वपूर्ण है, उसके ग्रहाश्रम प्रकरण में वैदिक धर्म के विषय में लिखते है कि:-

न जातु कामात्र भयान्त लोभाद। धर्म त्ययेज्जीवितस्यपि हेतोः।
धर्मो नित्य: सुख दु:खेत्व नित्ये, जीवो नित्यो हेतु स्वं त्वनित्य॥ महाभारते-॥

अर्थातः मनुष्यों को योग्य है कि काम से, अर्थात झूठ से कामना सिद्ध होने के कारण से वा निन्दा स्तुति आदि के भय से भी धर्म का त्याग कभी न करे और न लोभ से। चाहे झूठ अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो तथापि धर्म को छोडकर चक्रवर्ती राज्य को भी ग्रहण न करें। चाहे भोजन हादन जल-पान आदि को जीविका भी अधर्म से ही सके वा प्राण जाते हो परन्तु जीविका के लिये धर्म को कभी न छोडे। क्योंकि जीव व धर्म तो नित्य है तथा सुख द:ख दोनो अनित्य हैं अनित्य के लिये नित्य छोडना अतीव दुष्ट कर्म हैं इस धर्म के हेतु कि जिस शरीर आदि से धर्म होता है वह भी अनित्य हें धन्य वे मनुष्य है जो अनित्य शरीर और सुख दु:खादि के व्यवहार से वर्तमान होकर नित्य धर्म का त्याग कभी नही करते।

संस्कार विधि-।।

धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः-
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतो ऽवधीतः॥ महाभारते-॥

अथार्तः जो पुरूष धर्म का नाश करता है, उसका नाश धर्म कर देता है, और जो धर्म की रक्षा करता हे, उसकी धर्म भी रक्षा करता हैं इसलिए मारा हुआ धर्म कभी हमें भी न मार डाले, इस भय से धर्म का हनन अर्थात त्याग कभी न करना चाहिए।

यत्र धर्मो हव्यधर्मेण सत्य यत्रानश्तेन च-।
ळयन्ते प्रेक्षमाणानं हतास्तत्र सभासदा-।। मनु-।

अर्थातः जिस सभा में बैठे हुए सभासदों के सामने अधर्म से धर्म और झूठ से सत्य का हनन होता हैं उस सभा के सब सभासद मरे से ही है।

<u>महर्षि दयानन्द जी संस्कार विधि में</u>
<u>ग्रहाश्रम प्रकरण में लिखते है।</u>

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते येन वदन्ति धर्मम।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तत सत्य यच्छलेनाभ्यु पेतम-॥ महाभारते

अर्थातः वह सभा व परिवार नही है, जिसमें वृद्ध पुरूष न होवे। वे वृद्ध नहीं है जो धर्म की बात नहीं बोलते। वह धर्म नहीं है, जिसमें सत्य नहीं है और न व सत्य है जो छल से युक्त हो।

स्वाध्यायेन जपैर्होमेस्त्रैविधेनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञेश्य ब्राहीयं क्रियते तनुः॥ (मनु)

अर्थातः मनुष्य को चाहिए कि धर्म से वेदादि शास्त्रो का पठन-पाठन गायत्री-प्रणवादि का अर्थ विचार, ध्यान, अग्नि होत्रादि होम, कर्मोपासना ज्ञान-विद्या, पौर्णमास्यादि, इष्टि, पन्चमहायज्ञ, अग्निष्टोम आदि नयाय से राज्यपालन, सत्योपदेश और योगाभ्यासदि उत्तम कर्मो से इस शरीर को अर्थात ब्रहम्सम्बन्धी करें।

<u>सत्यार्थ प्रकाश से:</u> मनुष्य उसी को कहना कि मनन शील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुखः दुखः और हानी लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामथर्य से धर्मात्माओं की चाहे व महाअनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हो रक्षा उन्नति और प्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानी और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे प्राण ही भले चले जाये, परन्तु मनुष्यपन रूप धर्म से प्रथक कभी न हो।

<u>मानव के नव निर्माण का आधार वैदिक सोलह सस्कार है।</u>

संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना वैदिक संस्कृति में मानव जीवन निर्माण के लिये सोलह संस्कारो का विधान है। इसका अर्थ है कि जन्म से सोलह वार मानव को बदलने की प्रक्रिया है। जैसे लोहार लोहे को अग्नि में डालकर अपने अनुसार वस्तु का संस्कार देता है। उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होने से पहले और बाद में संस्कारो की भट्टी मे डाल कर दुगुर्ण निकाल कर सदगुण बनाने की प्रक्रिया है।

चरकऋषि ने कहा है: **<u>संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते</u>**

अर्थात संस्कार से पूर्व जन्म के दुर्गणो को हटा कर सदगुणो का आधान कर देने का विधान हैं बालक का जन्म होता है तो वह दो संस्कारों को लेकर चलता है, एक जन्म जन्मान्तरो के संस्कार दूसरा माता पिता के संस्कारो का वंष्ठा परम्परा से करता है। वैदिक संस्कार व संस्कशति की योजना से ही मानव का नव आदर्ष्ठा संस्कारिक निर्माण होता है।

<u>यह आवश्यक है-उपेक्षणीय नही</u>

श्रध्ये पाठक गणः आज समाज सुधारको को आज मानव जगत मे हो रहे कुसंस्कारो और अत्यधिक पाश्चात्य सभ्यता के वातावरण को देख कर चिन्तित है, आज परिवार टूट रहे हैं, स्वार्थ और अत्यधिक सुख पाने की लालसा में माता-पिता व अन्य बुजुर्गो की अवेहलना हो रही है। कितना सुन्दर और संस्कारिक भारतीयों का अतीत था, सभी भारतवासी सुख उठाते रहे और भारत धरती का र्स्वग धाम बना रहा। परन्तु आज से छ हजार वर्ष व्यतीत हुए कि भारतीयों के परिवार वैदिक शिक्षा को छोडकर अवैदिक शिक्षा पर चलकर निरन्तर धार्मिक सामाजिक राजनैतिक के उच्च आदर्शो को छोडते जा रहे है।

युग निर्माण के लिये आवश्यक प्रयत्न करना इस लिये उचित है कि जिस दुनिया में हम रहते है, यदि वह कुसंस्कारी व दूषित रही तो अपने लिये सदा संकट और चिन्ता की स्थिति बनी रहेगी। यदि चारो ओर विवेकहीन व दुष्टतापूर्ण वातावरण बना हुआ हो तो अपने सत्य आदर्श व यत्न निरर्थक चले जाते हैं। वातावरण में फैली बुराइयों और विचार धारा हवा और सर्दी गर्मी की तरह अपने ऊपर आक्रमण करती है। इसलिये आवश्यक है कि बुराइयों से सदैव संर्घर्ष करना चाहिए। समाज में कुरूतियां फैली हो और हम चुप बैठे रहे तो यह अविवेक पूर्ण होगा। चोर, डाकू-दुष्ट, दुराचारी, शरारती और अन्धविश्वासी लोगो के बीच रहकर कोई भी व्यक्ति अपनी सज्जनता व आदर्शो की रक्षा नहीं कर सकता है। किन्तु श्रेष्ठ मनुष्यों का उत्तरदायित्व है कि वेदानुकूल संस्कार व संस्कृति के प्रचार प्रसार और उसको अक्षुण्ण रखने के लिये सदैव तत्पर रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते है कि हे मनुष्यों तुम ईश्वर द्वारा प्रदत, अग्नि, वायु-जल-वनस्पति व अन्य दिव्य साधनो द्वारा एक क्षण भी जीवित नही रह सकते हो तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त वैदिक धर्म पर क्यों नहीं चलते हो यही तुम्हारी अशान्ति व दुखों का कारण यही है।

- वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड।
मो. 9411512019, 9557641800

स्वाभिमान || ओ३म् || स्वावलम्बन

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 27 मई से 03 जून 2018

आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज, इलाहबाद, (उत्तर प्रदेश)

''एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् (ऋ. 1/124/3)

विदुषी नारी सदा श्रेष्ठ मार्ग पर चलती है और कभी दिशाओं या मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती। ऋषि के शब्दों को क्रियान्वित करने के लिए दृढ़ संकल्प से जो स्त्रियां विदुषी होकर सत्य धर्म और उत्तम स्वभाव को स्वीकार करके मेघों के सदृश्य सुखों की वृष्टि करती हैं, वे बड़े सुखों को प्राप्त होती हैं।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धातों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है।

सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों से प्रार्थना है कि वे अपने-अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक कन्याओं को इस शिविर में भेजें।

उद्घाटन: रविवार 27 मई 2018 सांय 5 बजे

समापन: रविवार 3 जून 2018 प्रात: 10 से 1 बजे

❑ शिविरार्थी 27 मई को दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंच जाए। ❑ आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ❑ टार्च, लाठी, मग, साबुन (नहाने और कपड़े धोने वाला) साथ लाए। ❑ शिविर का गणवेश सफेद सलवार कमीज 2 जोड़ी, शर्ट में कॉलर व शोल्डर स्ट्रैप हो जिससे चुन्नी उसमें लग सके और सलवार का पौंचा 6 से ज्यादा न हो एवं केसरिया चुन्नी। ❑ सफेद पी.टी. शूज व मोजे। ❑ भोजन के बर्तन साथ लाएं (कटोरी, चम्मच, गिलास, प्लेट) ❑ ओढ़ने और बिछाने की चादर। ❑ कोई भी कीमती वस्तु, मोबाइल और अधिक पैसे साथ न लाएं। ❑ शिविर शुल्क 300/- रूपये प्रति शिविरार्थी होगा। ❑ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 27 मई दोपहर 1 बजे तक करा लें। ❑ शारीरिक रूप से अस्वस्थ कन्या शिविर में न आएं। ❑ शिविरार्थी अपने आने की सूचना एक सप्ताह पूर्वदे दें, व्यवस्था में सुविधा होगी।

निवेदन: सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस राष्ट्रीय शिविर में सैकड़ों कन्याएं भाग लेंगी, अत: अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल, देसी घी, मसाले आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं।

इस शिविर में योग्य प्रशिक्षिकाओं के निर्देशन में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

-: संयोजक :-

साध्वी डॉ. उत्तमायति
प्रधान संचालिका

मृदुला चौहान
संचालिका
मो. 09810702760

आरती खुराना
सचिव
मो. 09910234595

विमला मलिक
कोषाध्यक्ष
मो. 9810274318

पंकज जायसवाल
शिविराध्यक्ष

रविन्द्रनाथ जायसवाल
प्रधान आर्य समाज चौक

पी.एन.मिश्रा
मन्त्री आर्य समाज चौक

अजय निरूत्रा
मन्त्री जिला आर्य समाज

डॉ. उर्मिला श्रीवास्तव
प्रधानाचार्य आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज

सुधा श्रीवास्तव
प्रधानाचार्य आर्य कन्या इण्टर कॉलेज

कोकिला शुक्ला
प्रधानाचार्या आर्य कन्या इन्टर कॉलेज

संस्कृति सेवा

जीतने का सबसे ज्यादा
मजा भी तब आता है,
जब सारे लोग आपके हारने का
इंतजार कर रहे हों।

टंकारा समाचार मई 2018
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-05-2018
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.04.2018

मुद्रक व प्रकाशक—रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय